Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 18 अंक 09 30 सितम्बर, 2018 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

जन नायक ताऊ देवी लाल

105वें जन्म दिवस पर विशेष

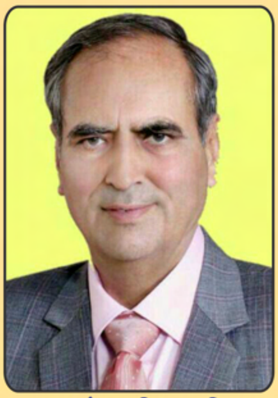

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

भारतीय इतिहास में केवल एक मात्र धरती पुत्र हुए जो आगे चलकर सम्माननीय ताऊ जी बने और पूजनीय भी। उनके जीवनकाल में लोगों के घरों में उनकी मूर्तियां सजी। चौधरी देवीलाल ने भातीय राजनीति का हर पद ग्रहण किया लेकिन अपनी जमीनी सोच और कार्यशैली में कभी बदलाव नहीं लाए। वे हर गांव के दूर कोने में बसने वाले को नाम से जानते थे, उनकी काटड़ी-बछड़ी की बात करते थे। पद की गारिमा-प्रतिष्ठा को बरकरार रखते हुए वे दरिद्र नारायण के घर द्वार तक पहुंचे और उनके जीवन में विकास की किरण भी पहुंचाई। सत्ता के बिना भी उन्होने लोगों के दिलों पर राज किया। वे शरीर जरूर छोड़ गए लेकिन उनकी आत्मा आज भी जीवित है। यह ताऊ का करिश्माई व्यक्तित्व ही था कि विधान सभा की की 90 में से 85 सीटें जीते तथा 1999 में चौटाला जी के गठबंधन में भाजपा ने लोकसभा की सभी 10 सीटों पर विजय पताका फहराई।

उनके श्रद्धांजलि समारोह में स्वर्गीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था कि वे एक जन नायक और अथक सिपाही थे। उन्होने 14-15 वर्ष की आयु में ही संघर्ष का दामन थाम लिया था और वही उनकी जीवन शैली बन गया तभी उन्होने अपना नाम भारतीय इतिहास में सुनहरे अक्षरों में अंकित कर दिया। कांग्रेस मुक्त भारत की वास्तविक नींव चौधरी देवी लाल ने ही रखी थी। संपूर्ण राष्ट्र को उन्होने एक सूत्र में पिरो दिया और पहली बार केंद्र में कांग्रेस को सत्ता के गलियारों से दूर कर दिया। वे विपक्षी एकता के कर्णधार बने। वे किंग मेकर की भूमिका में ही रहे कभी किंग बनने का सपना ना देखा। प्रधानमंत्री ताज सर्वसम्मति से उन्हे दिया गया लेकिन तप-त्याग की मूर्ति चौधरी देवीलाल ने बहुत गारिमामय ढंग से श्री वी पी सिंह के सिर पर धर दिया। जब वे उनके मानकों पर खरे नहीं उतरे तो श्री चंद्रशेखर को गद्दी पर बिठा दिया औ खुद वही संघर्ष की शैली पर चल निकले। ऐसा भी नहीं है कि केवल उनकी सोच खेत खलिहान तक ही सीमित रही हो, शिक्षा के क्षेत्र में भी उनका उल्लेखनीय योगदान रहा। घुमंतू परिवारों के बच्चों को स्कूल लाने हेतू प्रलोभन एक रूपया प्रति दिन से शिक्षा का प्रसार, स्त्री शिक्षा को बढ़ावा, गरीब बच्चों को वर्दी, कापी-किताब के साथ निशुल्क प्राथमिक शिक्षा, निशुल्क जन स्वास्थ्य हेतू 'जच्चा-बच्चा कल्याण योजना, प्रशासन आपके द्वार, भ्रष्टाचार बंद पानी का प्रबंध, किसान के खेत तक पक्के खालें, सरकारी भूमि पर लगे वृक्षों से किसान की फसल को होने वाली क्षतिपूर्ति हेतू हिस्सा, वृद्धा सम्मान पैंशन, कन्यादान और लोक राज लोक लाज से चलता है आदि उनकी इतनी गहरी सोच को कोई कैसे नजर अंदाज कर सकता है। अतः पूरे राष्ट्र में ताऊ आज समाज कल्याण योजनाओं के सुत्राधार माने जाते हैं।

खेल खिलाड़ियों और सुरक्षा सेनाओं के जवानों के विकास हेतू ताऊ ने विशेष रूप रेखा बनाई। कुश्ती के खेल के प्रति उनकी विशेष रूचि थी। हरियाणा प्रांत में वर्ष 1978 में प्रथम बार मुख्यमंत्री होते हुए उन्होने करनाल पुलिस लाईन में कुश्ती खेल नियमावली के अनुसार गद्दों पर राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता करवाई। वर्ष 1988 में राज्य कुश्ती प्रतियोगिता के समापन समारोह पर वार हीरोज मैमोरियल स्टेडियम अंबाला कैंट में प्रथम बार कुश्ती को राज्य खेल घोषित किया। इसी प्रकार वर्ष 1989 में हरियाणा पुलिस विभाग में सिपाही से लेकर इंस्पैक्टर तक के पदों में 3 प्रतिशत के आरक्षण का प्रावधान किया। अतः ताऊ ने प्रथम बार पूरे राष्ट्र में सुचारू तौर से खेल नीति बनाने की रूप रेखा तैयार की। इस नीति को आगे बढ़ाते हुए उनके सपुत्र पूर्व मुख्यमंत्री श्री औमप्रकाश चौटाला ने एक विधिगत खेल नीति अपनाई और सभी सरकारी विभागों में खिलाड़ियों के लिए 3 प्रतिशत कोटा आरक्षित किया। इसी कारण हरियाणा आज पूरे राष्ट्र में खेलों में प्रथम नंबर पर है। उन्होने वर्ष 1978 में काम्नवैल्थ व एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ी हरियाणा पुलिस के सिपाही श्री राजेंद्र सिंह को सिपाही से सीधी इंस्पैक्टर पदौन्नत किया

शेष पेज 2 पर

शेष पेज–1

जो बाद में डी आई जी के पद से सेवा निवृत हुए। इसी प्रकार पुलिसकर्मियों की समय बद्ध पदौन्नति का प्रावधान किया। यही नहीं 15 से 18 वर्ष की सर्विस के बाद सिपाही को हवलदार पद पर पदौन्नति का नियम बनाया। इस प्रणाली को आगे बढ़ाकर श्री औमप्रकाश चौटाला ने अपने मुख्यमंत्री कार्यकाल वर्ष 2000-2005 में 30-35 वर्ष की सर्विस वाले कर्मचारियों को पुलिस उपनिरीक्षक तक समयबद्ध पदौन्नति करने का प्रावधान किया। अतः आज हरियाणा प्रांत में सिपाही समयबद्ध तरक्की के आधार पर उप निरीक्षक के पद तक सेवा निवृत होता है जो कि पूरे राष्ट्र में एक अनुठी पहल है।

दूसरों के गम में शरीक होना और यथासंभव मदद उनकी फित्तरत थी। प्रदेश में बाढ़ आ गई तो रिंग बांध योजना बनी और आनन-फानन में कसी तसला लेकर खुद पहुंच गए तथा यह योजना आज तक कारआमद है। तदोपरांत बाढ़ ने कभी राज्य में नुकसान नहीं पहुंचाया। हरियाणा के हिस्से का पानी लेने हेतू फैसला भी करवाया। उस वक्त पंजाब से अकाली नेता उनके साथ रहे जो बाद में राजनैतिक कारणों से यह फलीभूत नहीं हो पाई लेकिन हरियाणा में इस कार्य की परिणिती में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी कभी इसी किसाने के मसीहा ने पांच तारा होटलों तक खाने-पीने की पहुंच कर दी थी। वे वास्तव में जन नायक थे। गांव में चौपाल की स्थापना और वहां हुक्का की व्यवस्था करना तथा गांव के विकास हेतू मैचिंग ग्रांट आदि अनेकों योजनाओं के वे जनक रहे।

उत्तम खेती के विकास के लिए वर्ष 1977 में चौधरी देवीलाल ने मित्रकीटों की पहचान और सरंक्षण की मुहिम चलाई जो नुकसान देय कीटों को खाकर किसान मित्रता निभा रहे थे लेकिन यह योजना ठंडे बस्ते में डाल दी गई। एक बार फसल बुआई में प्रकृतिक बाधा से देरी हो गई तो सरकारी तौर पर ट्रैक्टरों की व्यवस्था की गई और सरसों की फसल की बुआई तुरंत करवाई गई। ताऊ जी हमेशा ट्रैक्टर को किसान का गड्डा बताते थे इसलिए उन्होने टैक्ट्रर के उपर लगने वाले पंजीकरण शुल्क का माफ करवाया और पुलिस चालान से मुक्त करवाया। किसानों को मंडियों में अपनी नीजि आढ़त की दूकानें खोलने के प्रेरित किया।

छोटे काश्तकारों को उनका अधिकार दिलाने हेतू पंजाब विधानसभा में भू-पट्टेदारी अधिनियम 1953 बनवाकर मुजारों की बेदखली को रोका गया। इस अधिनियम के द्वारा 6 साल से भूमि काश्त कर रहे मुजारों को अदालत के माध्यम से आसान किश्तों पर जमीन खरीदने का अधिकारी दिलाकर मालिकाना हक दिलवाया। इसके इलावा उन्होने अपनी खुद की अधिकतर पुस्तैनी जमीन मुजारों व छोटे काश्तकारों को काश्त करने के लिए स्थाई तौर पर आंबटित कर दी थी। वे जन साधारण के कल्याण व उत्थान के लिए आवश्यक मूलभूत कल्याणकारी नीतियों के सुत्राधार रहे हैं। सारे राष्ट्र में उन्होने गरीब, किसान व शोषित वर्ग के लिए विभिन्न प्रकार की समाज कल्याणकारी योजनाएं शुरू की थी जिसका बाद में केंद्रीय सरकार तथा अन्य राज्य सरकारों ने अनुसरण किया है।

उन्होने हरियाणा बनने से पूर्व आम आदमी को न्याय दिलाने के लिए संघर्ष किए। वे अपनी दूरदर्शी व पारदर्शी सोच के द्वारा हर प्रकार की समस्या का समाधान निकाल लेते थे। राष्ट्रहित में किसी भी राजनैतिक व सामाजिक मुद्दे पर वे अपने विरोधियों तक से भी सलाह मश्विवरा करने में संकोच नहीं करते थे। अपनी निष्कपट, निस्वार्थ व त्यागी छवि के कारण वे समस्त राष्ट्र में 'ताऊ' के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका मानना था कि गांवों के विकास के बिना राष्ट्र तरक्की नहीं कर सकता क्योंकि शहरों की समृद्धि का मार्ग गांवों से होकर गुजरता है। इसलिए अपने शासनकाल में ग्रामीण मजदूर व काश्तकारों के साथ अन्याय नहीं होने दिया। किसान कामगार व ग्रामीण

एकता का किला सबसे सुरक्षित होता है। न वह टूटता है और न उसमें रहने वाला कभी दुखी होता है। - अज्ञात

मजदूर के हितों के प्रति उनके प्रयासों को देखते हुए स्वर्गीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्वर्गीय ताऊ देवीलाल के प्रति इस प्रकार से विचार व्यक्त किए - ''चौधरी देवीलाल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक ऐसी शक्ति है जो कि दूसरों को आगे बढ़ने के लिए सदैव गतिशील व मार्गदर्शक हैं, उनके व्यक्तित्व में एक खास दृढ़ता है और संघर्ष ही उनका जीवन है लेकिन उनके हृदय में दूसरों के प्रति प्रेम व सहानुभूति का गतिशील आवास है। हरियाणा प्रांत के हितों के प्रति वे सदैव सचेत चौधरी देवीलाल को संपूर्ण राष्ट्र के भविष्य की भी चिंता सताई रहती है।''

लेखक को उनके दलित प्रेम का नीजि ज्ञान है क्योंकि सन् 1986-87 में स्वंय उन्होने दलित वर्ग से संबंधित एक आई0ए0एस0 (सेवा निवृत) अधिकारी श्री कृपा राम पूनिया को राजनीति में प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया और प्रथम बार उनको विधायक बनाकर हरियाणा में सबसे प्रभावशाली कैबीनैंट मंत्री बनावाया और बातचीत में कहते थे कि एक दिन श्री पुनिया को देश का राष्ट्रपति बनाकर अपना संकल्प पूरा करेगें। अपनी इसी सोच के आधार पर उन्होने अनुसूचित जातियों व दलित वर्ग से अनेकों भाईयों को राजनीति में प्रवेश करवाया-जैसे कि नारनौल से श्री मनोहरलाल सैनी व भिवानी से श्री जय नारायण प्रजापति को सांसद बनवाया। इसी प्रकार कलायत विधानसभा क्षेत्र से श्री बनारसी दास बाल्मिकी, घरोंडा से श्री पीरू राम जोगी, टोहाना से श्री आत्माराम गिल आदि को विधायक बनाकर विधानसभा में प्रवेश करवाया। उन्होने हमेशा मजदूर व किसान वर्ग की आवाज को बुलंद किया और उनकी यह अवधाराणा थी कि राजनैतिक ताकत हासिल करके ही किसान-मजदूर का जीवन सुधारा जा सकता है। हरियाणा राज्य को प्रथम प्रांत का दर्जा दिलवाने में चौ0 देवीलाल का विशेष योगदान रहा है। उन्होने आल इंडिया हरियाणा एक्शन कमेटी गठित करके पंजाब सरकार व केंद्रीय सरकार के समक्ष भाषा तथा अन्य राजनैतिक आधार पर अलग प्रदेश के पक्ष में दलीलें पेश की और कड़े संघर्ष के बाद हरियाणा प्रांत को अस्तित्व दिलाने में सफलता प्राप्त की।

आज आवश्यकता है कि ताऊ देवीलाल की नीतियों व सिद्धांतों का अनुशरण किया जाए। इससे सरकारी नीति व कार्यशैली निर्धारण में मदद मिलेगी। चौधरी साहब की जन कल्याणकारी योजनाओं व निश्छल राजनीति से प्रेरणा लेकर प्रशासनिक व राजनैतिक तंत्र की विचारधारा को बदलने की नितांत आवश्यकता है ताकि ग्रामीण गरीब-मजदूर व किसान वर्ग के कल्याण व उत्थान के साथ-साथ स्वच्छ प्रशासन के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। वास्तव में ताऊ देवीलाल गरीब व असहाय समाज की आवाज को बुलंद करने वाले एक सशक्त प्रवक्ता थे इसलिए आज जन साधारण विशेषकर ग्रामीण गरीब-मजदूर, कामगार व छोटे काश्तकारों को अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने की आवश्कता है ताकि दलगत राजनीतिज्ञ व संबंधित प्रशासन इनके हितों की अनदेखी न कर सकें तभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का एक स्वावलंबी व स्वस्थ ग्रामीण समाज का सपना पूरा किया जा सकता है। अतः एक उदार हृदय एवं महान आत्मा - ताऊ देवीलाल को लेखक सदैव नत मस्तक होकर प्रणाम करता रहेगा।

लेखक 1977 से 1979, 1987 से 1989 तथा अगस्त-सितंबर 1999 से 2001 तक चौधरी साहब गुप्तचार विभाग के अधिकारी तथा पुलिस प्रमुख रहे हैं।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा तथा
प्रधान, अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व जाट सभा
चण्डीगढ/पंचकूला

किताबें ऐसी शिक्षक हैं जो बिना कष्ट दिए, बिना आलोचना किए और बिना परीक्षा लिए हमें शिक्षा देती हैं। - अज्ञात

खेल, किसान/कामगार हितैषी रहे भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी

- डा० महेन्द्र सिंह मलिक

भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी अब हमारे बीच में नहीं हैं। वो अपनी यादों व कामों के मील का पत्थर हमारे बीच छोड़कर गए हैं। विशेष तौर से उनका खेल प्रेम और किसान कल्याण योजनाएं भारतीय राजनीति और समाज में स्वीकार्य और यादगार बनाए रखेगा। उनकी विदाई देने उमड़े जनसैलाब को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि वो राजनायक थे। चौधरी देवीलाल की तरह राजनीति में ही उन्होंने किसी से शत्रुता नहीं पाली। राजनीतिक विरोधी भी उनकी इस अदा के कायल थे और एक तरह से भारतीय लोकतंत्र के बगीचे की वो शान थे।

लेखक के साथ उनकी एक छोटी सी मुलाकात 2 दिसंबर 1989 में हुई। आम चुनाव के बाद उस समय चौधरी देवीलाल को बतौर भारतीय कृषिमंत्री व उप प्रधानमंत्री की शपथ के लिए दिल्ली बुलाया गया था और हरियाणा निवास में मुख्यमंत्री के चुनाव के लिए विधायक दल का नेता चुनने के लिए की मीटिंग बुलाई गई थी। उस समय हरियाणा में जनता दल व भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी लेकिन विधायक दल का नेता चुनने के लिए उस समय भाजपा के नेता डॉक्टर मंगलसेन, डॉ. कमला वर्मा, अन्य विधायकों व जन जनायक चौधरी देवीलाल में आपसी मतभेद थे। चौधरी देवीलाल ने स्थिति को भांपकर तुरंत अटल जी से संपर्क किया और मसले के तत्काल निदान का आग्रह किया। लेखक हरियाणा भवन में सीएम सूइट के बाहर मौजूद थे और ठीक उसी समय अटल जी आते हुए दिखाई दिए। उनके चेहरे पर गजब का तेज और मुस्कुराहट थी। उन्होने आते ही चौधरी देवीलाल और डाक्टर मंगलसेन से दो मिनट गुफ्तगु की व डॉ. मंगलसेन की तरफ देखते हुए कहा ''मंगलसेन जी जो कुछ भी प्रांत के हित में हो सकता है, सर्वसम्मति से निर्णय कर लें और यह सारा मसला चौधरी देवीलाल पर छोड़ दें।'' इसके तुरंत बाद ही माननीय ओम प्रकाश चौटाला को सर्वसम्मति से विधायक दल का नेता चुन लिया गया और अगले दिन 3 दिसंबर 1989 को ही मुख्यमंत्री पद की शपथ दिला दी गई। ऐसे चमत्कारित व्यक्तित्व के धनी अटल जी की बात को शायद ही कभी कोई इंकार कर पाया हो। उनके शब्दों में भरपूर जादू ही था।

लेखक के व्यक्तिगत अनुभव और अटल जी के अद्भुत व्यक्तित्व का दूसरा वृतांत दिसंबर 1998 का है। उस समय भातीय हाकी टीम 32 साल के बाद ऐतिहासिक जीत हासिल कर स्वदेश लौटी थी। परंपरागत खेलों के समापन के बाद टीम के सभी पदक विजोताओं, कोच व मैनेजर को माननीय प्रधानमंत्री जी के साथ जलपान के लिए बुलाया गया। भारतीय टीम की प्रधानमंत्री निवास पर अटल जी के साथ साधारण मुलाकात निम्न चित्र में स्पष्ट है।

उपरोक्त चित्र में लेखक बाएं से दूसरे नंबर पर बतौर टीम मैनेजर, श्री एम के कौशिक टीम कोच के साथ खड़े हैं। इससे आगे चित्र में भारतीय हाकी संघ के सक्रेटरी जनरल ज्योतिकरण, भारतीय हाकी संघ के अध्यक्ष स्वर्गीय सरदार के पी एस गिल, भारतीय ओलंपिक संघ के अध्यक्ष श्री सुरेश कलमाड़ी, हाकी टीम के कैप्टन धनराज पिल्लई, गोलकीपर आशीष बलाल, अन्य खिलाड़ियों के साथ अपने हस्ताक्षर सहित एक यादगार हाकी स्टिक माननीय प्रधानमंत्री को अर्पित कर रहे हैं।

उस समय भारत सरकार स्वर्ण पदक विजेता टीम के लिए 5 लाख रूपये की राशि पुरूष्कार स्वरूप प्रदान करती थी। इस हाकी टीम में कोच व मैनेजर सहित कुल 16 सदस्य थे। लेखक ने प्रधानमंत्री जी से निवेदन किया कि 16 सदस्य टीम के लिए 5 लाख रूपये की राशि बहुत कम है। यह सुनते ही माननीय अटल जी का खेल प्रेम उमड़ पड़ा व टीम को 80 लाख रूपये देने का मन बना लिया लेकिन श्री सुरेश कलमाड़ी बीच में बोल पड़े व लेखक को संबोधित कर कहा मलिक जी 20 लाख तथा हर खिलाड़ी को तरक्की और बिना तरक्की वाले खिलाड़ी को 2 अग्रिम वेतन वृद्धियां उचित रहेंगी, जिसकी माननीय प्रधानमंत्री जी

विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है। - रवींद्रनाथ ठाकुर

ने तुरंत सहमति दे दी, जो उनके खेल व खिलाड़ियों के प्रति विशेष प्रेम को दर्शाता है।

तत्पश्चात वर्ष 2003 में एक बार अटल जी कुरूक्षेत्र में आए और सार्वजनिक सभा में बोलते हुए धर्म क्षेत्र कुरूक्षेत्र को विश्व का सर्वश्रेष्ट पर्यटक स्थल व आकर्षक केंद्र बनाने का वादा किया व कुछ दिन बाद ही उन्होने कुरूक्षेत्र में ब्रह्म सरोवर के पास एक शानदार तारामंडल की स्थापना करवा दी।

इसके साथ ही उनका स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू की तरह एक लोकप्रिय प्रधानमंत्री, एक राजनेता व एक कवि होने के साथ-साथ किसान-कामगार प्रेम जगजाहिर रहा है। अतः किसान, कामगार का बोझ कम करने का श्रेय अटल बिहारी वाजपेयी जी को ही जाता है। वाजपेयी जी को प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना बोर्ड भी सदैव उनकी याद कराते रहेंगे। गांव की सड़कों के लिये पैसे देने वाले वो भारत के पहले प्रधानमंत्री थे। 2001 में प्रधानमंत्री रहते हुए अटल बिहारी वाजपेयी ने ग्रामीणों को आवास देने के लिए प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना (ग्रामीण आवास) लॉन्च की थी। योजना का लक्ष्य था कि सबके पास अपना घर हो। इसके लिए 20 लाख आवास हर साल बनाने का लक्ष्य रखा गया था। इस योजना ने ग्रामीण भारत के आवासीय ढांचे को काफी मजबूती दी। 25 सिंतबर 2001 को अटल जी ने इस योजना की शुरुआत की थी। इसके तहत ग्रामीण भारत के गरीबों को मजबूत बनाना था। इसके लिए 10000 करोड़ सालाना का बजट भी निर्धारित किया गया था।

अटल बिहारी वाजपेयी 15 अगस्त 2003 को जब लाल किले के प्रचीर से देश को संबोधित कर रहे थे तब पहली बार उन्होंने ही किसानों की आय दोगुना करने की बात कही थी। हालांकि उनका ये लक्ष्य 2010 तक पूरा करने का था। किसानों को क्रेडिट कार्ड की सुविधा अटल बिहारी वाजपेयी ने ही शुरू की। गेहूं का समर्थन मूल्य 19.6 प्रतिशत बढ़ाकर इतिहास रचा। चीनी मिलों की लाइसेंस प्रणाली से मुक्त किया और राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना तैयार कराई। वर्ष 1998-99 में वाजपेयी ने गेहूं का समर्थन मूल्य 460 रुपये प्रति क्विंटल से बढ़ाकर 550 रुपये प्रति क्विंटल किया। यह बढ़ोत्तरी 19.6 प्रतिशत रही। चीनी मिलों को लाइसेंस प्रणाली से मुक्त करने का एतिहासिक फैसला किया। फैसले से पहले किसान का सिर्फ 55 फीसदी गन्ना ही चीनी मिलों पर जाता था, बाकी गन्ना कोल्हू और खांडसारी इकाइयों का जाता था। इससे किसान को आर्थिक चोट लगती थी। चीनी मिलें बढ़ी और किसान का अब 90 फीसदी से ज्यादा गन्ना चीनी मिलों को जाता है। प्रधानमंत्री के पास कृषि मंत्री का पद भी था। अटल बिहारी वाजपेयी ने पूरी तरह समझकर किसान हित का बड़ा कदम मानते हुए क्रेडिट कार्ड व्यवस्था की शुरूआत की। वाजपेयी जी का चौथा एतिहासिक कदम था राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना। वर्तमान में प्रधानमंत्री कृषि बीमा योजना में हालांकि अटल बिहारी वाजपेयी की ओर से तैयार कराई गई बीमा योजना के कई प्रावधान हटा लिए हैं।

इसी तरह बीटी कॉटन पर उनका उनका फैसला रहा बीटी कपास की खेती की अनुमति देने के फैसले ने भारत को सबसे बड़ा उत्पादक और दुनिया भर में सूती का दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक बना दिया है। आज, देश के कपास के बढ़ते क्षेत्र का 95 प्रतिशत से अधिक बीटी कपास के अधीन है। ग्रीन से जीन क्रांति तक 2003-04 से 2016-17 के बीच, देश ने कच्चे कपास और धागे के निर्यात और आयात पर बचत करके 0.67 बिलियन प्राप्त किए। यह कपास किसानों की बढ़ती आय के अतिरिक्त है। गुजरात के किसानों ने इस फैसले से सबसे ज्यादा फायदा उठाया। 2002-03 से 2013-14 के बीच कृषि में राज्य की कपास क्रांति प्रति वर्ष 8 प्रतिशत अभूतपूर्व वृद्धि का सबसे बड़ा चालक था। यह वृद्धि पंजाब द्वारा हरित क्रांति के दौरान हासिल की गई थी। किसान सबसे बड़े राजनीतिक क्षेत्र हैं, गुजरात में निर्णय का महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव पड़ा। वो देश और दुनिया में खेती के बदलावों पर बहुत जागरूक रहते थे।

हरियाणा प्रदेश के साथ भी उनका अलग ही भावानात्मक और सियासी नाता रहा। लोगों के दिलों में बसे वाजपेयी ने सरकार और संगठन में शीर्ष पर रहते हुए न केवल भावनात्मक रूप से हमेशा हरियाणा को प्राथमिकता में रखा, बल्कि प्रदेश में गठबंधन की राजनीति को जन्म दिया और सरकारें भी बनवाई। पूर्व उप प्रधानमंत्री चौधरी देवीलाल से मधुर संबंधों की नींव पर वाजपेयी ने प्रदेश में गठबंधन की राजनीति का आधार तैयार किया। वर्ष 1977 में आपातकाल से लेकर पिछले लोकसभा चुनाव तक वाजपेयी जब भी हरियाणा आए, राजनीतिक लिहाज से उनका आगमन अहम साबित हुआ। वाजपेयी ने वर्ष 1980-81 में भिवानी में एक बड़ी रैली को संबोधित किया था। इसमें पूर्व प्रधानमंत्री चरण सिंह और पूर्व उपप्रधानमंत्री चौ. देवीलाल जैसे दिग्गज साथ थे। इसी तरह वर्ष 1987 में भी वाजपेयी ने हरियाणा में दस्तक देकर जबरदस्त सत्ता परिवर्तन की बुनियाद रखी। तब लोकदल ने सहयोगी दल के साथ सरकार बनाई थी। चौ. देवीलाल तथा हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री चौ. ओमप्रकाश चौटाला के साथ उनके मधुर रिश्ते थे। पूर्व उपप्रधानमंत्री

कुल की प्रतिष्ठा भी विनम्रता और सदव्यवहार से होती है, हेकड़ी और रुआब दिखाने से नहीं। - प्रेमचंद

और हरियाणा की सियासत के पुरोधा स्व. देवीलाल से वाजपेयी के हमेशा बढिया़ संबंध रहे। वाजपेयी जी ने चौधरी देवी लाल के निधन पर चौधरी ओपी चौटाला को फोन कर अंतिम संस्कार करने के बारे में भी जानकारी ली थी और कैबिनेट में फैसला कर दिल्ली मे राजघाट पर संघर्ष स्थल के नाम से चौधरी देवीलाल को दाह संस्कार की जगह दी और संसद परिसर में जन नायक ताऊ देवीलाल की प्रतिमा स्थापित करवाई ताकि किसान मसीहा की हमेशा याद बनी रहे।

अटल बिहारी जी एक स्पष्टवादी व निष्पक्ष छवि के व्यक्ति थे। वे हमेशा मानवाधिकारों तथा सार्वजनिक हितों के मुद्दों पर अपनी पार्टी पर भी कटाक्ष करने से गुरेज नहीं करते थे। एक बार गुजरात में मानवाधिकार उल्लंघन के मुद्दे पर तत्कालीन मुख्यमंत्री का निष्पक्ष तौर से राजधर्म निभाने की नसीहत दी थी।

अगर देश की मौजूदा राजनीति में आज बार-बार अटल बिहारी वाजपेयी जैसे सुलझे नेता की जरूरत बताई जा रही है, तो इसकी वजहें हैं। देश के एक बड़े वर्ग और अलग-अलग विचारों वाली पार्टियों को अपने साथ लेकर चलने का करिश्मा वाजपेयी ने ही किया था और आज सरकारों का यही एक मजबूत आधार भी बना हुआ है। नेहरू के बाद अगर कोई करिश्माई पीएम हुआ, तो वे थे अटल बिहारी वाजपेयी। उन्होंने अपने नाम, उदार छवि और करिश्मे के बूते वो सरकार बनाई, जो अर्थव्यवस्था को एक नई ऊंचाई पर ले गई और भारत 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद पहली बार आर्थिक विकास दर की राह पर इतनी तेज दौड़ा। वाजपेयी दिल से कवि थे और उनकी कविता की दुनिया राजनीति के उनके सफर से लेकर उनकी निजी अनूभूतियों का विस्तार लिए हुई थी। उनके ओजपूर्ण भाषणों का पूरा देश मुरीद था. संसद में जब वह बोलते थे, तो पक्ष और विपक्ष, दोनों ओर के सांसद ध्यान से उनकी बातें सुनते थे। राजनीतिक रैलियों और सभाओं में उन्हें सुनने के लिए अपार भीड़ जुटती थी। अतः इस महान राष्ट्र की एकता अखंडता व धर्म निरपेक्षता को कायम रखने के लिए आज स्वर्गीय पूर्व प्रधानमंत्री अटल जी की सद्भावना एवं पारस्परिक भाईचारे की नीतियों को सुचारू तौर से अपनाने की नितांत आवश्यकता है। वाजपेयी के जाने के साथ राजनीति का एक उदार, समावेशी और वैभवपूर्ण अध्याय का अंत हो गया है। ऐसे महान पुरुष को मैं श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

चौधरी छोटूराम की पहली विशाल रैली

– सूरजभान दहिया

सन् 1935 के इण्डिया एक्ट शासन–सुधारो के अन्तगर्त सन् 1937 में असेम्बली के चुनाव होने के बाद चौ. छोटूराम की यूनियनिस्ट पार्टी की पंजाब में सरकार बनी। उस सरकार में चौ. छोटूराम वजीर बने। इस सरकार ने बिना किसी देर के वे कानून बना दिये जिनका ड्राफ्ट चौ. छोटूराम ने पहले ही तैयार कर रखा था ये सभी किसान कल्याणकारी थे जिनसे पजांब के किसान शोषण मुक्त हो गऐ। इन कानूनो पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुये ला. मुकन्दलाल पुरी ने कहा– "दुर्भाग्यवश चौ. छोटूराम के प्रभाव से सारे ही कानून ऐसे बन गये हैं जो हमारा सर्वनाश करने वाले हैं।" डा0 सर गोकलचन्द नारंग कहने लगे–"ये कानून नहीं बल्कि हमारे लिए तो मारकूट कानून बन गये हैं।" पजांब के देहाती लोग इन्हे 'सुनहरी कानून' के नाम से संबोधित करके अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते थे। और शहरी लोग इन्हे 'काले कानून' कहकर अपना रोष प्रकट करते थे। चौ. छोटूराम कहते थे "ये कोई कानून नही हैं परन्तु लोगों को रोजी रोटी कमाने के लिए सही रास्ते दिखाने के दिशानिर्देश हैं, ठंगी व शोषण से बचने की एक सामाजिक व्यवस्था है।"

इन कानूनों सामाजिक प्रबन्धन से पंजाब में शांतिपूर्ण क्रांति का श्रीगणेश हुआ तथा पजांब स्वर्ण युग में प्रवेश कर गया। चौ. छोटूराम यर्थात पजांब के किसानों के संकट मोचनहर बने इसलिये लाखो कंठो से उन्हें दीनबंधु कहकर पुकारा जाने लगा। वे एक राजनीतिक भूमिका की बजाय एक समाज सुधारक की भूमिका में दिखाई दिये जिससे वे नवयुग प्रवृतक बन गये। पंजाब के मिनिस्टर रहते हुये उन्होंने समाज उत्थान हेतु जो कदम उठाये उससे पजांब में जहां धूल उड़ती थी, वहां हरे भरे खेत लहलहा उठे, जिन्हें दो जून की रोटी नहीं मिलती थी, वे भरपेट खाना खाने लग गये और जो वर्ग दबा कूचला था वह खुशी की सांस लेने लगा। सारे भारत में पजांब गेहूँ का वेयरहा उस बन गया, गन्ना, कपास जैसे कैश क्रोप उगाकर किसान के चेहरे पर रौनक आ गई। वह अपनी पैदावर का खुद मालिक हो गया तथा सम्पन्नता की ओर अग्रसर हो गया। इससे पजांब में अनेक प्रगति अवरोधक खत्म हो गये। पंजाब में जो ब्याज के कारखाने चल रहे थे वे बंद हो गये, कानी डाण्डी व खोटे बाट की तिजारत पर विराम लग गया। पजांब का किसान आर्थिक गुलामी से निजात पाकर खुद सरकार का हिस्सा बन गया। पंजाब में उस बदलते मिजाज ने साहूकार, सूदखौरो व शहरी सम्पन्न लोगो की नींद उडा दी। वे इस क्रांति कारक परिवर्तन के महानायक चौ. छोटूराम के प्रति आग बबूला हो गये।

हताश शहरी असेम्बली के मेंम्बरों ने यूनिनिस्ट पार्टी की सरकार के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव असेम्बली में पेश कर दिया।

यह अविश्वास प्रस्ताव 112 के मुकाबले 45 मतो से गिर गया परन्तु उस अविश्वास प्रस्ताव के बाद प्रधानमंत्री सर सिकन्दर हयात खां कुछ घबरा गये। उनकी घबराहट के दो कारण थे, एक तो निरन्तर बढ़ता हुआ विरोध और दूसरा गर्वनर के रूख में परिवर्तन। इसलिए उन्होंने अपने मंत्री मण्डल की आपातकालीन बैठक बुलाई। उन्होने चौधरी छोटूराम से कहा कि यह उचित होगा कि आप अपने कृषक प्रेम और पिछड़े बर्गो की खुशहाली की भावनाओं को जरा ढ़ीली कर दे। वरना यूनिनिस्ट पार्टी की सरकार ज्यादा देर तक पंजाब में नहीं चलपायेगी क्योंकि ब्रिटिश सरकार भी आपके क्रांतिकारी कार्यक्रमों से खुश नहीं है। इस पर अन्य मन्त्रियों ने भी अपनी सहमति व्यक्त कर दी।

चौधरी छोटूराम ने बड़ी दृढ़ता के साथ प्रधानमंत्री को कहा–"आपका मंत्री मण्डल न तो गर्वनर का वरदान है और न ही शहरी पढ़े लिखे लोगों का, जो घनी हैं व चतुर भी। आपके मंत्री मण्डल बनाने की शक्ति उन्हीं लोगों से मिली है जोकि दीन, गरीब, अनपढ़ व पिछड़े हैं और गाँववासी हैं। सर सिकन्दर चौध् ारी साहब के उस पंजाब से कुछ प्रभावित तो हुये किंतु उन्होंने कहा कि जनता के जिस बहुमत की चट्टान पर हमारी कुर्सियाँ टिकी समझते हैं, इसमें ब्रिटिश सरकार की भी तो मेहरबानी है।"

सर सिकन्दर को चिंतित हुये देखकर चौधरी साहब थोडा सा मुस्कराते हुये बोले– "वजीरे आजम ! वे दिन लद गये जबकि ब्रिटिश अफसर सरकार पर हावी होते थे। जनता की सहानुभूति को न गर्वनर कम कर सकता न वायसराय। आपकी जो जनता में प्रतिष्ठा है, उसे देखने के लिये आपने कभी अवसर नहीं निकाला। मैं कांफ्रसो का आयोजन करता हूँ आप चलकर देखे। कांफ्रसो का नाम सुनकर सर सिकन्दर चौके और बोले, खुदा के लिए कांफ्रेस मत कराईए। हिन्दू सभा और कांग्रेस वालो ने हमे बहुत बदनाम कर रखा है। हमारी कांफ्रसो में उल्लू ही बोलेगे। चौधरी साहब बडे उत्साह से बोले– चलो मैं एक सभा हरियाणा क्षेत्र में करता हूँ। आपके खयाल के अनुसार अगर हाजिरी कम भी हुई तो उसमें आपकी कोई बदनामी नहीं होगी। क्योंकि आप कह सकेगे कि वह हिन्दू बाहुल इलाका है और हिन्दू इलाके में जाने का उन्हें कभी मौका नहीं मिला। सर सिकन्दर तथा अन्य मंत्रीगण इस बात पर सहमत हो गये।

चौधरी छोटूराम ने अपनी पहली यूनिनिस्ट पार्टी की सरकार की जनसभा सोनीपत में आयोजित करने की घोषणा कर दी। इस जनसभा की सूचना प्रत्येक गाँव में बड़ी तेजी से पहुँच गई। लोगों में जनसभा के प्रति नया उल्लास जागश्त हो गया। हुक्का बैठको का मुख्य बातचीत का मुद्रा चौधरी छोटूराम की सोनीपत रैली का बन गया। हर कोई उस रैली में शामिल होने के लिए तैयारी करने लग गया। सारे हरियाणा श्रेत्र में जोश का माहौल था – कहाँ सिरसा कहाँ नारनौल, कहाँ नूहँ, कहाँ कैथल, कहाँ अम्बाला, सभी जगह– चलो सोनीपत चौधरी की रैली में का वातावरण त्वरित हो गया। रैली के उद्घोष से गांव – गॉव में ज्वर सा प्रवाहित हो गया था, एक नया उत्साह था चौधरी ने बुलाया है। पनघट पर आते जाते महिलाओ के गीतो ने वातावरण में नई उमंग भर दी थी। एक ऐतिहासिक गीत का उल्लेख है।

"छोटूराम वजीर की पचांयत का बुलावा आया रे 'माँ'
गाम–गाम में"
'सनपत में बिछेगी खरड लाट में।
कट्ठे होगे छत्तीस बिरादरी के लोग हरहाल में,
चालायगें सिगांर कै सारे चौधरी के मान में।
सास–ससुर सभी तैयार से जाण में,
बेरा मैंने उसका दे दिया 'भाण' आपणे पीहर में।।"

मैं 1965 से 1968 तक छोटूराम आर्य कालेज, सोनीपत का छात्र था। पूराने रोहतक बसस्टैड़ से सटी मनसाराम भजनी की कपड़े की दूकान थी। वे आर्य समाज एवं चौधरी छोटूराम विचारधारा के प्रचारक रहे थे। उन्होंने चौधरी छोटूराम के बारे में जानकारी देते समय उपरोक्त गीत की पक्तियाँ हमें लिखवाई थी।

हर गांव में लोगों ने पहले से ही जाने की तैयारी कर ली थी। जिसके पास तगडै बैलो की जोडी थी, उसने अपनी बैलगाड़ी सजाली थी। दूर–दूर से लोग 8–10 दिन पहले ही अपनी बैलगाड़ी लेकर सोनीपत के लिए चल पड़े थे। रात के विश्राम के लिए जिन गांव में रूकते, वहां उनका घी–बूरा परोसकर अतिथि सत्कार किया जाता था। गांव–गांव में चौकीदारों ने रैली की मुनादी कर दी थी।

जमना–पार यानी पश्चिमी उत्तर प्रवेश के किसानों में रैली में शामिल होने का बड़ा चाव था। बागपत में नौका बनवा कर जमना के कांठे पर सजा रखी थी। इधर मुरथल, बहालगढ़ नाहरा; खेड़ा के बडे–बडे जमीदारों ने उनके स्वागत खाने–पीने की तैयारी कर ली थी। रैली तक उन्हें ले जाने के लिए बैलगाड़ी, रथ, मंझोली तैयार खडी थी। जगह–जगह खाप–पचायतों की उस रैली में शामिल होने के लिए बैठके हो चुकी थी। दिल्ली से सटे गांवो बुआना, कंझावला, पूठ–कराला, नागंलोई, पालम आदि बडे गांवो से बैलगाड़ी की लार, बैलो के घूघंरो की आवाज रात मे सोते लोगों के कानों में सून रही थी। गाडी के पीछे हांड़ी में आग सूलग रही थी, हुकटी का गुडगडाहट के साथ काफला सोनीपत की ओर अग्रसर था।

सोनीपत में चौ. टीकाराम व चौ. शादीलाल वकील की कोठियो पर सम्पर्क कार्यालय बना रखे थे। यहां पर घुड़ सवार तैनात थे जो संदेश वाहक की भूमिका में रहते थे। रैली से पूर्व रोज की सूचना प्रत्येक गाँव से घुड़सवारों द्वारा यहाँ दर्ज करवाई जाती थी। रैली की पूरी तैयारी करने का दायित्व चौ० टीकाराम को सौपां गया था। सोनीपत के आस–पास के सभी गांवो में एक चौधरी एक सम्पर्क सूत्र का दायित्व निभा रहा था।

अपने को संकट में डाल कर कार्य संपन्न करने वालों की विजय होती है, कायरों की नहीं। – जवाहरलाल नेहरू

रैली के दिन से पहले ही लोग अपने रिश्तेदारीयों में जाकर रूकने लग गये थे। बैलगाड़ियों की लार, घूड़सवारो की टकटक रैलगाड़ियों में भीड, बसो में सवारियो का उल्लास, पैदल चलने वालो का काफला चारो तरफ एक जुनून को इंगित करना सोनीपत की ओर अग्रसर था, अपने किसान मसीहा चौधरी छोटूराम के प्रति समर्पणता का एक अद्वितीय दृश्य। सोनीपत के जटवाडे में रैली से कई दिन पहले से ही रैली के निर्धारित दिवस में सोनीपत के आकाश के नीचे एक और आकाश बन गया था पगडियो का आकाश–रगंबिरगी पगडियाँ रैली मैदान जो सोनीपत रेलवे स्टेशन के पास था को सुशोभित कर रही थी। ऊंची सजी हुई स्टेज पर जब वजीरे आजम सर सिकन्दर हयात रवां के साथ चौधरी छोटूराम विराजमान हुये तो सोनीपत शहर का आकाश 'चौधरी छोटूराम जिदांबाद' 'वजीरे–आजम सिकन्दर हयात खां जिन्दाबाद, यूनियनस्ट पार्टी जिन्दाबाद के नारो में लगातार गूंजता रहा। सर सिकन्दर हयात एवं उसके मंत्री साथी उतनी बडी भीड को देखकर प्रसन्न मुद्रा में काफी समय तक अपार जनसमूह का अभिनन्दन स्वीकार करते रहे। स्टेज सक्रेटरी चौधरी टिकाराम ने चौधरी छोटूराम तथा सर सिकन्दर हयात रवां को एक सथ स्टेज पर बुलाया ताकि लोगों के भावात्मक अभिनन्दन के। उन्होंने हाथ जोड़े स्वीकार किया, तत्पश्चात् जनसभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई।

एक लाख से ऊपर की जनसभा को चौधरी छोटूराम ने संबोधित करते हुये कहा "पंजाब में तीन साल से यूनिनिस्टपार्टी की सरकार है जिसे आप भाई जमीदारा सरकार कहते हैं। निःसदेंह यह किसानों की सरकार है, उपेक्षितवर्ग की सरकार है, शोषित की सरकार है, पिछडो की सरकार है। अतः अब तो तुम्हे अभिमान होना चाहिए कि पंजाब में तुम्हारी सरकार है। यह तुम्हारे हित के लिये प्रतिबद्ध है। तुमने ही उसे बनाया है और तुममे से तुम्हारे भाई ही उसे चला रहे हैं। उस सरकार ने तुम्हारे कष्ट निवारण के लिये थोड़े ही समय जो कानून बनाये तथा तुम्हे उन कानूनो में जो राहत दिलवाई उससे कुछ लोग परेशान हैं। पिछले असेम्बली के इजलाश में विरोधी पार्टियों ने हमारे मंत्रीमण्डल के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव भी लाया गया पर वह गिर गया, गिरना ही था क्योंकि यूनियनिस्ट पार्टी के मेम्बर विरोधी पार्टियो की गतिविधियो पर पैनी नजर रखते हैं। हम कुछ और कल्याणकारी स्कीमे बनाने जा रहे हैं ताकि देहात में भी वही सुविधाएं मिले जो आजतक सिर्फ शहरो तक सीमित रही है।"

उसके पश्चात् स्टेज पर वजीरे आजम सर सिकन्दर हयात खां आये, करतल धवनी से पुनः उनका स्वागत हुआ। उन्होंने संबोधन करने से पूर्व चौधरी छोटूराम की ओर देखा और अपनी भावना व्यक्त करते हुये कहा "हरियाणा की पाक जमीं पर मैं चौधरी छोटूराम के आर्शीवाद से पंजाब के वजीरे आजम की है हैसीयत से आप के सामने खड़ा हुआ हूँ और आप के प्यार को शब्दो में ब्यान नहीं कर पा रहा हूँ। देखने और कानूनी रूप में पंजाब का बड़ा मंत्री मैं हूँ किन्तु वास्तव में सारे मन्त्रीमण्डल की जानो चौधरी छोटूराम हैं। उस बात को उनके विरोधी भी खूब जानते हैं। हमारी जमीदार सरकार ने पंजाब में आर्थिक गुलामी के जूए को उतार फैका है। चौधरी छोटूराम जो मसला हाथ में लेते हैं उसको पूरा करके ही दम लेते हैं। उनकी सारी नीतियाँ उन उपेक्षित लोगों के लिए होती हैं जिन्हें उनका हक अभी तक नही मिला है। आज उस जनसभा से मुक्द्मे जो होशला मिला है उससे यह सरकार आपके लिये और क्रांतिकारी कार्यक्रम लागू करने के लिए प्रतिबद्ध हो गई है।"

इस कांफ्रेस के बाद सर सिकन्दर के सारे बहम दूर हो गये। उसके दिल में जो कम जारी थी वह निकल गई और उन्हें विश्वास हो गया कि चौधरी छोटूराम के हरियाणा क्षेत्र में व्यापक समर्थक तो है ही परन्तु सारे पंजाब में भी उनका प्रभाव कम नहीं है। यह बात उन्हे स्वप्न में भी खयाल में नहीं आती है पर चौ. छोटूराम देहात पंजाब के बेताज बादशाह हैं– अति लोकप्रिय लिडर हैं। इसके बाद लायलपुर, गुजरावाला, झंग में उनकी ऐतिहासिक महा रैलिया हुई। इन रैलियों में यूरोप के कई देशो तथा अमेरिका के प्रैस रिपोर्टर भी पहुँचे जिन्होंने लिखा कि पंजाब की असली ताकत यूनियनिस्ट पार्टी है अर्थात् चौधरी छोटूराम ही पंजाब की सबसे लोकप्रिय शकसियत हैं। इस रैली का आयोजन 24 नवम्बर, 1941 को किया गया था जो चौधरी छोटूराम का जन्मदिन था। उस रैली में बढ़े–बूढ़ो, जवान, नर–नारियों सभी ने हिस्सा लिया। बड़ी सयानी औरतो की भागीदारी काफी भावनात्मक थी। कई बड़ी औरते तो अपने पोतो को साथ ले गई ताकि उन्हें रैली में जाने में ज्यादा दिक्कत न आये। उनकी चौ. छोटूराम को देखने की इच्छा बडी प्रबल थी। रैली के बाद भी उसकी चर्चा चलती रही। रोहठ गाँव का एक विवरण उपलब्ध है। वहाँ की एक बडी बूड़ी से जिसने रैली में हिस्सा लिया था किसी ने पूछा "दादी चौधरी छोटूराम को देखा। वह तो ताऊ ज्ञानी जिस्सा छोटा–सा था।" दादी ने तापक से उसे टोका – "छोरे। राम छोटा–बडा नही होता राम तै राम ही होव्वै सै। ऊपर वाले राम के दर्शन तै होगे नहीं, पर धरती आले छोटे राम के तै दर्शन हो गये। मैं तो गगांजी नहागी। अर और सुण। यो साल में बाजरा जो पड़ा सै, कदै का सिब्बन बानिया ले जाता। म्हारे छोटे राम (छोटूराम) ने बानिया पै नकेल घायल दी, ईबवो म्हारी जिन्नस पर बुरी नजर डालने की हिम्मत नहीं कर सकता। बानिया ने तै ईबते पैहला म्हारे पै कर्जा लाद रखा था सारा छोटूराम ने खत्म कर दिया, और म्हारी नरक की जिन्दगी स्वर्ग की बणा दी। बानिये की बही के कागज पर दूकानदार अचार रखकर देते मैंने देखे सै। ऊपर आला राम छोटे राम की ऊमर बढ़ावै।"

अ से अमित पंघाल, ब से बजरंग पूनिया, व से विनेश फौगाट

-धर्मेंद्र कंवारी

इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में 16 अगस्त से 2 सितंबर आयोजित एशियाई खेलों में भारत ने 67 साल बाद अपने प्रदर्शन को फिर से दोहराया है तो इसका सबसे बडा दारोमदार हरियाणा के खिलाडियों पर रहा। हरियाणा के खिलाडियों के बूते ही भारत के खिलाडियों ने मेडल के ढेर लगा दिए। 1951 में हुए एशियाई खेलों को पहले एशियाई खेल कहा जाता है। इनका आयोजन दिल्ली में 4 से 11 मार्च के बीच हुआ था। इन खेलों में भारत समेत 11 देशों के 189 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया था। मेडल टेली में जापान सबसे ऊपर था और उसके बाद भारत दूसरे नंबर पर था। जापान को 24 गोल्ड, 21 सिल्वर और 15 कांस्य पदकों के साथ कुल 60 पदक मिले थे वहीं भारत को 15 स्वर्ण, 16 रजत और 20 कांस्य पदकों के साथ 41 पदक मिले थे। जकार्ता एशियाई खेलों में स्वर्ण पदकों के मामले में जहां भारत ने 1951 के रिकॉर्ड की बराबरी की हैं, वहीं मेडलों की कुल संख्या के आधार पर भी उसने इन खेलों के इतिहास में अपना बेस्ट रिकॉर्ड बनाया है। 15 स्वर्ण, 24 रजत और 29 कांस्य पदकों को मिलाकर भारत के कुल पदकों की संख्या 69 हो गई है। इससे पहले भारत ने साल 2010 में चीन के ग्वांगझू में हुए एशियाई खेलों में 65 मेडल हासिल करके अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया था। 13वें दिन के अंत तक यानी शुक्रवार को ही भारत ने ग्वांगझू एशियन गेम्स में अपने प्रदर्शन की बराबरी कर ली थी, मगर शनिवार को अंतिम दिन भारतीय बॉक्सर अमित पंघल ने 49 किलोग्राम वर्ग में जैसे ही उ़्बेकिस्तान के हसनबॉय दस्मातोव को हराया, उन्होंने न सिर्फ़ अपने लिए गोल्ड जीता बल्कि भारत के लिए नया रिकॉर्ड भी बना दिया। एशियाई खेलों में भारत के लिए पहला स्वर्ण पदक भी हरियाणा के बजरंग पूनिया ने जीता था और अंतिम स्वर्ण पदक भी हरियाणा के अमित पंघाल ने जीता। भारत की पदक तालिका में अगर हरियाणा प्रदेश की बात करें तो सीना गर्व से चौडा हो जाता है। हरियाणा ने इन खेलों में अपना दबदबा बनाते हुए कुल कुल पदकों के लगभग 25 प्रतिशत पदक राज्य के खिलाडि़यों ने जीते हैं। हरियाणा के खेल मंत्री श्री अनिल विज ने कहा कि एशियन खेलों में हरियाणा के खिलाडि़यों ने कुल 17 पदक जीत कर देश में अव्वल स्थान प्राप्त किया। राज्य के कुल 84 खिलाड़ी एशियन खेलों में भाग लेने के लिए जकार्ता पहुंचे थे, जिनमें कुल 26 खिलाडि़यों ने पदक हासिल किए हैं। हरियाणा के खिलाडि़यों ने इन खेलों में 5 स्वर्ण पदक, 5 रजत पदक और 7 कांस्य पदक हासिल किए हैं। इनमें एकल खिलाडि़यों के तौर पर जीन्द के मनजीत सिंह ने 800 मीटर तथा पानीपत के नीरज चौपड़ा ने जवेलिन थ्रो में स्वर्ण पदक जीते हैं। इसी प्रकार रोहतक के अमित ने बॉक्सिग, झज्जर के बजरंग पूनिया व चरखी दादरी की विनेश फोगाट ने कुश्ती व अरपिंद्र ने बाधा दौड में स्वर्ण पदक हासिल किए है।हरियाणा के खिलाडि़यों ने इन खेलों में 5 स्वर्ण पदक, 5 रजत पदक तथा 7 कांस्य पदक हासिल किए हैं। इनमें एकल खिलाडि़यों के तौर पर जीन्द के मनजीत सिंह ने 800 मीटर तथा पानीपत के नीरज चौपड़ा ने जवेलिन थ्रो में स्वर्ण पदक जीते हैं। इसी प्रकार रोहतक के अमित ने बॉक्सिग, झज्जर के बजरंग पूनिया व चरखी दादरी की विनेश फोगाट ने कुश्ती में स्वर्ण पदक हासिल किए है। जीन्द के लक्ष्य श्योराण व यमुनानगर के संजीव राजपूत ने शुटिंग में रजत पदक जीते है। इसी प्रकार सोनीपत की सीमा पुनिया ने महिला डिस्कश थ्रो, भिवानी के विकास कृष्ण ने बॉक्सिग, झज्जर के दुष्यंत ने रोइंग तथा पानीपत के अभिशेष वर्मा ने शुटिंग में कांस्य पदक जीतने में सफलता हासिल की है। इसके अलावा 3 टीमों ने रजत पदक जीते हैं, जिनमें घुडसवारी, महिला हॉकी तथा महिला कबड्डी की टीमें शामिल हैं। इसी प्रकार पुरुष वर्ग की कबड्डी, हॉकी व रोइंग सहित 3 टीमों ने कांस्य पदक जीतने में सफलता प्राप्त की है। वहीं एकल मुकाबलों में 9 पुरुष व 2 महिलाओं ने पदक हासिल किए है वहीं टीम प्रतियोगिताओं में 6 पुरुष व 9 महिलाएं शामिल थी। इस प्रकार इन खेलों में कुल 15 पुरुषों व 11 महिलाओं ने एकल या टीम के सदस्य के तौर पदक जीतने में सफलता प्राप्त की है। अब अगर जाट समाज के इसमें योगदान को देखें तो पांच स्वर्ण पदकों में बॉक्सिग में अमित पंघाल, कुश्ती में विनेश फौगाट और बजरंग पूनिया के तीन गोल्ड शामिल हैं। यानी पांच में तीन स्वर्ण पदक। हरियाणा की खेल नीति के अनुसार अब अमित पंघाल जो सेना में सैनिक है, हरियाणा में डीएसपी पद व तीन करोड इनाम का हकदार होगा और यही सम्मान बजरंग पूनिया और विनेश फौगाट को मिलेगा। अब इन तीनों खिलाडियों के बेकग्राउंड पर नजर डाली जाए हर युवा के पीछे एक संघर्ष की बडी दास्तान है। अमित पंघाल, बजरंग पूनिया सामान्य किसान परिवार से आते हैं और इनके परिवारों ने संघर्ष कर इन्हें इस मुकाम तक पहुंचा। पिता की हत्या के बाद मां ने किस तरह मुसीबतें झेलकर विनेश को पाला होगा और यहां तक पहुंचाया होगा इसका अंदाजा आप खुद लगा सकते हैं। इन युवाओं ने आज जो मुकाम हासिल किए हैं उनसे सीख लेकर जाट समाज के युवा आगे बढ सकते हैं और इनसे बढिया कोई रोल मॉडल और हो नहीं सकता है जो झटके में अपने परिवार को आर्थिक और सामाजिक तौर पर आगे लेकर चला जाता है। अब समाज को चाहिए कि वह युवाओं को अ से अमित पंघाल, ब से बजरंग पूनिया और व से विनेश फौगाट का पाठ पढाकर खेल के मैदान में उतारें। बदहाल होती खेती के सामने घुटने टेक से हमारे किसान समाज को अपने युवाओं को खेल, सेना और दिमागी रूप से दक्ष युवाओं को यूपीएससी की तैयारी की तरफ रूख करवाना चाहिए, ये परिवार, समाज और प्रदेश को खुशहाली की तरफ लेकर जाएगा। नौकरी की तलाश में रहने वाले युवाओं को खेलों को भी अपने करियर के प्राथमिकता के रूप में अपनाने के संबंध में सोचना ही चाहिए। अब आपको खेलों की सफलता भी मालामाल कर सकती है। आपको नौकरी, नकद पुरस्कार और सामाजिक प्रतिष्ठा के अलावा भी तमाम सुविधाएं मिलती हैं। ये तभी संभव है जब हम अपने युवाओं के सामने अमित पंघाल, बजरंग पूनिया और विनेश फौगाट जैसे युवाओं के उदाहरण रखें और उनके बारे में बताएं।

हम जैसा बोते है, वैसा काटते हैं। हम अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करते हैं। –स्वामी विवेकानंद

POSTER MAKING COMPETITION ON 22-11-2018

FOR SCHOOL GOING STUDENTS

A Poster Making Competition will be organized by JAT SABHA, CHANDIGARH for school going students on 22rd November, 2018 from 10 to 11 AM in the premises of JAT BHAWAN, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh.

The aim of this Competition is to generate creative spirit among the children and polish the existing potential a mong them. To widen the scope of talent search in this field and give incentive to the deserving children, it has been decided to classify all the students into three categories as under:-

Category A Class III to V
Category B Class VI to VIII
Category C Class IX to XII

For each category there will be prizes of Rs. 2100/-, Rs. 1500/-, Rs.1100/- and three consolation prizes of Rs. 500/-each. The topic of the Poster Competition will be "Childhood today" (आज का बचपन) **or** "Floods in India" (भारत में बाढ़) Duration of the Competition will of one hour. Entries for the Competition may be sent to JAT BHAWAN, 2-B, SECTOR 27-A, CHANDIGARH -160019 by post or personally by 20th November, 2017 up to 5 P.M. with entry fee of Rs. 10/- per participant.

Bus Fare/Conveyance charges of Rs. 20/- per participant will be given to the students/participants of local Chandigarh, participants/students coming from Mohali, Panchkula will be paid Rs. 30/- per participant as Bus Fare/conveyance charges, while students participating in the Competition from Pinjore, Kalka etc. will be paid Rs. 50/- per participant for the Competition. Students/ participants coming from Haryana, Punjab to take part in this Competition will be paid actual to & fro bus fare per participant.

Terms & Conditions of the Competition are as under :-

1. The participants must bring their identity cards or the identity slips along with attested photograph issued by the Head of the Institution/School for eligibility in the Contest.
2. The participants should bring their own drawing material and cardboard. Only drawing sheets will be given by the Competition Organizers.
3. The judgment of the Chairman of the Competition will be final and binding on all.
4. The result of the Competition will be announced on the same day and prize winners will be honoured with cash awards and merit certificates on the eve of Basant Panchmi & Birth Day Celebrations of Deen Bandhu Sir Chhotu Ram.

Further enquiries may be made on Telephone Nos. 0172-2654932, 2641127, Email: jat_sabha@yahoo.com or personally from the Jat Sabha Office, at JAT BHAWAN, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh.- 160019.

केरल प्रांत के बाढ पीड़ितों के लिए आर्थिक सहायता-इंसानियत का परम धर्म

इस वर्ष अगस्त 2018 में केरल राज्य में भंयकर बाढ़ से जन जीवन अस्त-व्यस्त हो गया और हजारों करोड़ की सम्पत्ति नष्ट हो गई। यही नहीं अभी तक 700 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है और हजारों पशुधन भी बर्बाद हो चुका है तथा लगभग 10 लाख से अधिक लोग बेघर हो चुके हैं। बाढ़ के कारण इस प्रांत में चारों ओर हा-हाकार मचा हुआ है।

बाढ़ पीड़ितों की सहायता हेतू जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला के अध्यक्ष व सभा की कार्यकारिणी के अन्य अनेक सदस्यों ने अपनी श्रद्धानुसार अनुदान देकर मानव धर्म निभाया है। प्रदेश के 36 बिरादरी के भाईयों, बहनों, माताओं व आदरणीय बुजुर्गों से मेरा नम्र निवेदन है कि इस पुनित कार्य में उदारतापूर्ण अनुदान देकर आप भी मानव धर्म निभायें। आप द्वारा अनुदान स्वरूप दी गई राशि तुरंत बाढ़ पीड़ितों को राहत हेतू सीधे भेज दी जाएगी। दानकर्ताओं के नाम मीडिया में तथा जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किए जाएगें। अनुदान के लिए भेजी जाने वाली राशी नकद, चैक, डी0डी0, आर0टी0जी0एस0 की मार्फत 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन, 2-बी, मध्य मार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़-160019 को भेजी जा सकती है अथवा जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आई0एफ0 एस0सी0 कोड - एचडीएफ सी 0001324 में सीधे ट्रांसफर की जा सकती है। जाट सभा को दी जाने वाली राशी आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-जी के अंतर्गत पत्र क्रमांक फ स आ आ-2/चण्डी/तक/80जी/ 382/2013-14/01 दिनांक 04-04-2014 के तहत आयकर से मुक्त है।

अतः आपसे पुनः निवेदन है कि जाट सभा द्वारा मानव हित में शुरू किए गए इस पुनित कार्य में बढ़-चढ़कर अनुदान देने की कृपा करें।

डा0 एम0 एस0 मलिक
आईपीएस (सेवा निवृत)
अध्यक्ष

जाट कौन हैं?

– धर्मवीर चौधरी

जाट कौन हैं? यह प्रश्न बहुत ही सरल लगता है लेकिन इसका उत्तर उतना ही कठिन है। लेकिन फिर भी मैं इसका उत्तर ऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर इस संक्षेप लेख के द्वारा देने का प्रयास कर रहा हूं। जाट का शाब्दिक अर्थ तथा भावार्थ एकजुट होना है अर्थात बिखरी हुई शक्ति को इकट्ठा करना या किसी कार्य को एकजुट होकर करने वालों को ही जाट कहा जाता है। इसीलिए पाणिनी ऋषि ने लगभग 4000 वर्ष पूर्व अष्टाध्यायी मैं जट् झट् संघाते लिखा है। जाट बुद्धिजीवियों ने जाट को परिभाषित करने के लिये अंग्रेजी में इसका इस प्रकार संधिच्छेद किया है– J का अर्थ Justice अर्थात न्यायप्रियए A का अर्थ Action अर्थात कर्मशील, T का अर्थ Truthful अर्थात सत्यवादी। इन तीनों के गुणों के मिलने पर संपूर्ण जाट कहलाता है। लेकिन जाट कौन हैं? प्रश्न ज्यों का त्यों खड़ा है। सबसे पहले हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि Yayat, Yat, Yet, Yeti, Yates, Yachi, Jat, Jatt, Jati, Jutes, Juton, Jaton, Jeth, Gat, Jatee, Gatak, Goth आदि इसी जाट शब्द के र्प्यायवाची हैं जो केवल उच्चारण भेद के कारण हैं। यह सत्य है कि उच्चारण हर बीस कोस के बाद बदल जाता है। इसलिए पुरानी कहावत है– कोस कोस पर बदले पानी, बीस कोस पर वाणी। उदाहरण के लिए छोटे से हरियाणा राज्य में कहां शब्द को रोहतक क्षेत्र में कड़ै, अहीरवाल क्षेत्र में कठै, भिवानी क्षेत्र में किंत तथा हिसार क्षेत्र में कड़ियां बोला जाता है। यही शब्द पंजाब में जाकर कित्थे और फिर जम्मू व हिमाचल प्रदेश में कुत्थे हो गया। इसी प्रकार ब्रज क्षेत्र में जाट को जाटन तो पंजाब व डोगरी क्षेत्र में जट्ट या जट्टु हो गया। मध्य एशिया में जत्त–जत्ती, इटली में गोथ, जर्मनी में गुट्टज्ञ तो चीनी भाषा में 'याची' हो गया। जिस प्रकार चीनी यात्री फाह्ययान ने अपनी भारत यात्रा के वृतान्त में सिन्धु नदी को Sindhu न कहकर Shintuth लिखा तो समुना नदी को Poo-ha लिखा। ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि जाटों को पूरे संसार में अलग–अलग उच्चारण से बोलना स्वाभाविक है। इसका यहां मैं केवल एक ही प्रमाण दे रहा हूं ।

Russin historian, K.M. Safequadrat, delivered a speech in the International Congress at Moscow in Aug. 1964, which was published in Indian Newspaper. He said," I studied the histories of various sects before I visited India in 1957. It was found that Jats live in an area extending from India to Central Aesa and Central Europe. They are known by different names in different countries and they speak different languages but they are all one as regards their origin." अर्थात रूसी इतिहासकार के.एम. सेफकुदरत ने अगस्त 1964 में मास्को में एक भाषण दिया जो भारतीय समाचार पत्रों में भी छपा था और उसने कहा, 'मैंने 1967 में भारत की यात्रा करने से पहले इतिहास व विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया और पाया कि जाट भारत से मध्य एशिया और मध्य यूरोप तक रहते हैं। वे अलग–अलग देशों में अलग–अलग नामों से जाने जाते हैं और वे भाषाएं भी अलग बोलते हैं। लेकिन उन सभी का निकास एक ही है।' इसलिए जाट कौम एक ग्लोबल नस्ल है। लेकिन जाट है कौन? यह अभी तक अनुत्तरित है। सारे संसार में मुख्य तौर पर जाट के दो ही रूप रहे हैं किसान और सैनिक इन दोनों के कार्यों से जाट के चरित्र का निर्माण हुआ। किसान ईश्वर पर सबसे अधिक भरोसा करने वाला है और विडंबना ही रही है कि ईश्वर की विपदाओं को सबसे अधिक इसी ने झेला है। लेकिन वह इंसानी अत्याचार और अन्याय का प्रतिवादी है। सैनिक के तौर पर इंसानी अत्याचार व हमलों का वह घोर प्रतिवादी है। लेकिन अनुशासनप्रिय के साथ–साथ विजय उसके जीवन का अंतिम लक्ष्य रहा है। किसान और सैनिक दोनों के कार्य अकेले न होकर एकजुट होकर करने वाले रहे है। इसलिए एकजुटता से ही जट और जाट कहलाए। इसी कारण जाट का चरित्र Justice,Action,Truthful बना तथा इसी बल पर इस कौम ने प्राचीन समय में संसार की बड़ी–बड़ी लड़ाइयां लड़ी और लगभग दो तिहाई संसार पर राज किया। कुछ इतिहासकारों ने याट या यादु से भी जाट शब्द की उत्पति बतलाई है। महर्षि यास्क के ग्रंथ में 'जटायते इति जाट्यम' अर्थात जटायें रखने वालों को जाट बतलाया गया है लेकिन जाट का धर्म क्या है? जहां तक घोषित धर्मो की बात है तो इसके प्राचीन दस्तावेज चीनी यात्री फाह्ययान के वृतांत में जाटों के ध र्म की पहली बार बात की है जो लगभग 1600 वर्ष पहले भारत आया था। उसने सबसे पहले अफगानिस्तान होते हुए स्वात घाटी (जहां आजकल पाकिस्तान में युद्ध छिड़ा है) में प्रवेश किया। उसके बाद पेशावर से सीधा मथुरा आया, वहां से बौद्धों के शहर बनारस, वहां से श्रीलंका सीधा श्रीलंका पहुंचा और समुंद्र के रास्ते चीन पंहुच गया। अफगानिस्तान से लेकर बिहार में गया और फिर पटना और गया पहुंच गया। तक के पूरे क्षेत्र को अंग्रेज अनुवाद James Leqqe ने जाट–जुट्स बहुल क्षेत्र लिखा है। जहां सभी जगह बौद्ध धर्म का डंका बज रहा था तथा जगह–जगह बौद्ध विहार बने थे जहां हजारों हजार बौद्ध भिक्षु रहते थे। इस क्षेत्र में कहीं जीव हत्या नहीं होती थी। नशे का नाम तक नहीं था, घी–दूध का अधिक प्रयोग होता था। केवल चाण्डाल जाति के लोगों को मछली पकड़ने का अधिकार था। इन्हीं लोगों में से कुछ को पुजारी बनाया जा रहा था। कहीं–कहीं वैष्णव पंथ था

जिसके लिए कुछ ब्राहमण पुजारी थे लेकिन उन्होंने कहीं भी हिंदू धर्म या हिंदू शब्द का इस्तेमाल नहीं किया न ही पुराण, रामायाण, महाभारत, गीता आदि में हिंदू शब्द का उल्लेख किया गया। लेकिन बौद्ध धर्म साहित्य का बार–बार वर्णन आता है। इससे स्पष्ट है कि उस समय तक भारत में हिंदू धर्म के नाम का प्रचलन तथा ब्राहमण साहित्य का लेखन नहीं हुआ था। लगभग समस्त जाट कौम बौद्ध धर्मी थी। फिर हिंदू शब्द और हिंदू धर्म कहां से आया? भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में बोलने की भाषा में कहीं भी 'ट' शब्द का इस्तेमाल नहीं होता वे इसे 'त' बोलते हैं। ये लोग 'ट्रेन' को 'त्रेन' बोलते हैं। बिहार के मैथिली क्षेत्र में 'ड़' की जगह 'र' का प्रयोग होता है तो दक्षिण के मालाबर क्षेत्र में 'ज' की जगह 'श' का प्रयोग होता है। इसी प्रकार सिंधु नदी के पश्चिम में रहने वाले क्षेत्र के लोग सिंधु नदी को हिंदू बोलते थे। जब आठवीं व नौवीं सदी में सिंधु पार के क्षेत्र में इस्लाम फैला तो सिंधु के पूर्व भारत में हिंदू के नाम से प्रचलित हो गया। क्योंकि अरबी भाषा में 'स' की जगह 'ह' शब्द का उच्चारण होता है। सप्ताह को हफता कहते हैं। इससे पहले न कहीं हिंदू शब्द था न ही हिंदू धर्म। यह शब्द उच्चारण भेद के कारण जैसा कि अलग–अलग क्षेत्रों में जाट के साथ हो रहा है। इसलिए चीनी यात्री फाह्यायान ने अपने लेखों मं कहीं भी हिंदू धर्म का नाम तक नहीं लिखा है। मुगलकाल तक हिंदू धर्म पूर्णतया प्रचलन में नहीं था। अंग्रेजों के भारत के बाद और उनके इतिहासकारों ने सन् 1790 के बाद इसे हिंदू धर्म के नाम से प्रचारित किया। इस धर्म को सनातम धर्म (सबसे प्राचीन धर्म) कहना हास्यापद है।

जाटों ने अपने चारित्रिक गुण एकीय ईश्वर मत के अनुसार मध्य एशिया में बौद्ध धर्म के बाद इस्लाम धर्म को अपनाया जो सिंधू तक फैला तथा यूरोप में 16वीं शताब्दी के बाद जाटों ने कैथोलिक ईसाई धर्म अपनाया तथा 18वीं सदी में भारत के जाटों ने पंजाब में सिख धर्म अपनाया। 1875 में आर्यसमाज की स्थापना के बाद भारत के शेष जाटों ने उसी निराकर एकेश्वर मत के अनुसार वैदिक धर्म अपनाया क्योंकि जाट चरित्र में मूर्ति पूजा का कभी कोई स्थान नहीं रहा। लेकिन आर्यसमाज इस धर्म को कानूनी जामा पहनाने में पूर्णतया असफल रहा और जाट कौम को मंझधार में छोड़ दिया। जिस कारण वे वैदिक धर्म की बजाए सनातनी पाखण्डवाद की तरफ लौटने लगा और अपने को हिंदू कहने लगा। जबकि स्वंय स्वामी दयानंद जी ने हिंदू शब्द का विरोध किया था लेकिन उन्हीं के अनुयायियों ने स्वामी जी की अवहेलना की। इस प्रकार आज जाट मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, कुछ जैन तथा शेष बिखरे हुए आर्यसमाजी और ब्राहमणवादी हिंदू हो गए। इसलिए अंग्रेजी इतिहासकार जे.सी.मोर ने लिखा है–'जाट कौम हिंदुओं की जाति नहीं यह एक नस्ल है'

मंडियों में लुटता किसान-किसानों के हक पर आढ़ती भारी

– अनामिका

किसानों के खून–पसीने से हासिल की गई उपज का यदि पारदर्शी तरीके से मूल्य मिले तो किसी को कोई एतराज नहीं होना चाहिए। लेकिन प्रभावी लाबी के दबाव में राज्य सरकारें किस तरह कारगर फैसलों से यू टर्न ले लेती हैं, इसका उदाहरण हरियाणा सरकार द्वारा लिये गये किसानों की उपज का मूल्य सीधा उनके खाते में भेजने वाले फैसले को पलटने से मिलता है। दरअसल, गत 27 अप्रैल को खाद्य व आपूर्ति विभाग के निदेशक द्वारा पत्र में कहा गया था कि किसानों की उपज का मूल्य सीधे उनके खातों में डाला जायेगा। इस पारदर्शी नीति से जहां समय पर किसानों को मेहनताना मिलना था, वहीं दलालों की भूमिका को सिरे से खारिज किया गया था। जिलों में अधिकारियों को निर्देश दिये गये थे कि किसानों के प्रमाणित कागजों मसलन राजस्व रिकॉर्ड, आधार कार्ड व राशन कार्ड आदि की जांच करके उनके खातों में आरटीजीएस के तहत भुगतान किया जाये। लेकिन यह फैसला आढ़तियों को रास नहीं आया। उन्होंने हरियाणा बंद तक की धमकी भी दी। जिसके चलते दबाव में आई हरियाणा सरकार ने फैसले पर यू टर्न लेते हुए निर्णय लिया कि किसानों को आढ़तियों की जरिये ही अदायगी की जायेगी।

दलील दी गई थी कि राज्य के ग्यारह जनपदों में यह व्यवस्था लागू होगी। पड़ोसी राज्यों से आने वाले अनाज की हरियाणा में बिक्री रोकने के लिये यह कदम उठाया गया है। दसअसल, आढ़तों में किसानों से औने–पौने दामों में अनाज खरीदने का सिलसिला सदियों से चला आ रहा है। ऊंची दरों पर ऋण देना और खड़ी फसल हथिया लेना, इसी व्यवस्था का उदाहरण है। मंड़ियों में एक पीजीवी वर्ग नहीं चाहता था कि उसकी भूमिका किसानों की उपज के मूल्य के भुगतान में खत्म हो। इसके चलते उन्होंने सरकार पर दबाव बनाने के प्रयास में आंदोलनों की धमकी तथा प्रदेश की सभी मंड़ियों को बंद रखने की चेतावनी दी। मगर राज्य सरकार जो किसानों की हितैषी होने के दावा करती रही है, आढ़तियों की घुड़की से तुरंत बैकफुट पर आ गयी। सरकार का यह फैसला प्रधानमंत्री द्वारा आम बजट में किसानों को प्राथमिकता देने के फैसले, किसानों की आय दोगुनी करने और डिजिटल ट्रांजेक्शन की अवधारणा के भी खिलाफ है। यानी राज्य सरकार ने किसानों के हितों को नजरअंदाज करते हुए आढ़तियों को प्राथमिकता दी। भाजपा का समर्थक माने जाने वाले आढ़ती वर्ग को किसानों के मुकाबले प्राथमिकता देती रही है। निःसंदेह सदियों से बाजारी शक्तियों से हलकन किसान को पारदर्शी भुगतान व्यवस्था के जरिये मुश्किलों से उबारा जाना चाहिये।

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। – स्वामी विवेकानंद

सामाजिक सद्भावना

– महेंद्र सिंह जागलान

भारतीय संविधान निर्माताओं ने तत्कालीन समाज में फैली जातिवादी एवं छुआछुत के कारण समाज का कुछ वर्ग पिछड़ गया। उसे मुख्यधारा में मिलाने के लिए केवल इसके लिए विशेष रूप से छूट देकर आरक्षण की व्यवस्था की गई थी। देश में वोटों की राजनीति के चलते उसे आरक्षण को समाप्त करना तो दूर बल्कि और आर्थिक स्वार्थ पूर्ण तरीके से लागू कर दिया। राजनीतिज्ञों ने निजी स्वार्थ व परस्पर विद्वेश के कारण कुछ जातियों को छोड़कर कुठारी कमिशन के नाम पर समान सामाजिक स्तर, समान कार्य क्षेत्र, समाज सोच और समान अस्तित्व वाली जातियों को जो शिक्षा के क्षेत्र व कृषि व कृषि जोत घट जाने के कारण जिनका निर्वाह करना मुश्किल हो रहा था और राष्ट्र निर्माण में जिनका महत्वपूर्ण योगदान है, उन्हें ऊपर उठाने के लिए आरक्षण की सिफारिश की गई थी। जिस रीर्पोट को तोड मरोड़ कर आनन–फानन में लागू किया उसमें समाज का जो वर्ग राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। देश के भूतपूर्व प्रधानमंत्री और खाद्यान्न में स्वावलम्बी बनाने आदरणीय श्री लाल बहादुर शास्त्री ने जिसे जय जवान, जय किसान कहकर सम्मानित किया उसे राजनीतिक रंजिश के कारण छोड़ दिया। आज जबकि यांत्रिकी युग है एवं कुछ प्रौद्योगिक करण हो रहा है ऐसे में एक वर्ग जो अपनी क्षमतानुसार देश निर्माण में जुटा हुआ था। अचानक बदलाव के कारण पिछड़ गया उसे अपने जीवन सुधारने का अहसास हुआ। उसने हक मांगा तो चालाक व छली लोगों ने समाज में दरार डाल दी जिसका परिणाम सामाजिक विद्यटन है पर राष्ट्रनिर्माता यह वर्ग विद्यटन सहन नहीं कर सकता। इस सामाजिक ताने–बाने को बनाए रखने के हर संभव प्रयास किए जाएंगे। जाट आरक्षण की आड़ में कुछ स्वार्थी लोगों ने विभित्र प्रकार की भ्रांतियां फैलाकर हरियाणे का भाईचारा बिगाडने का काम किया है। जिसका परिणाम है यहां आगजनी, जानमान का काफी नुकसान हुआ है। शान्तिपूर्वक धरना देना व प्रदर्शन में शामिल होकर उपद्रव करके सामाजिक ताने–बाने को भंग कर दिया, जो समाज के लिए नुकसान दायक सिद्ध होगा। मेरे नौगामा खाप के 21 गांवों में जब भी कोई सामाजिक समस्या आ जाती है तो उसे सभी बैठक बुलाकर मिल बैठकर उस पर विचार करते हैं और जब भी नौगमा खाप की पंचायत होती है उसमें सभी जातियों के लोगों को शामिल किया जाता है और सबको बराबर समझा जाता है। पहला नियम होता है। सभी लोग पंचायत में नीचे बैठते हैं। मौके पर बड़ी आयु के व्यक्ति की अध्यक्षता में पंचायत की कार्यवाही को चलाया जाता है। इसकी शक्ति बड़ी होती है। उनके फैसले की अवहेलना नहीं की जाती। नोगामा खाप ने समाज को सुदृढ़ रखने के लिए तथा उसके बनाए नियमों का मान रखने के लिए यह ठोस रिवाज बनाए थे इन पर चलकर नैतिकता की पूरी रखवाली भी रखी थी। यहां धन का नहीं इज्जत का मान था। मगर राजनीति ने हमारे सारे ढांचे को तहस–नहस कर दिया, हम सब लाचार हैं जो जातिगत द्वेष बढ़ गया है। वो गलत है, हम सामाजिक प्राणी है। मानव समूह को समाज कहा गया है। वहां रहने वाला हर व्यक्ति इस समाज का अंग होता है, जिस प्रकार मानव शरीर के अलग–अलग अंग मिलकर पूरे शरीर को बनाते हैं उसी प्रकार की समाज की सभी जातियों से ही समाज बनता हैं। इस पूरे समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए हमारे पुरखों ने सामाजिक नियम निर्धारित किए थे जिन पर चलना हर व्यक्ति का फर्ज माना जाता था। इन नियमों के उल्लंघन से ही समाज का नुकसान होता है, हमारे हरियाणें में तो जाति बिरादरी की प्रथा है। इसलिए यहां पर बिरादरी स्तर पर भी नियत्रंण होता है। जाट आरक्षण आंदोलन के दौरान जो भी घटनाएं हुई बहुत ही निदंनीय हैं, उससे समाज में दरार आई है। उसे आपसी भाईचारे व शान्ति द्वारा ही मिटाया जा सकता है। मैं नोगामा खाप का प्रवक्ता होने के नाते पूरे नोगामा खाप की तरफ से सभी से अपील करता हूँ कि शान्ति का माहौल बनाऐं रखने में अपना सहयोग करें और किसी भी अफवाह पर ध्यान न दें। नोगामा खाप द्वारा जल्द ही एक सर्वदलीय बैठक बुलाकर जिले में शान्ति व्यवस्था एवं सौहार्द बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास किए जाएंगे। नोगामा खाप के प्रत्येक गांव में सद्भावना कमेटियां बनाने की जरूरत है जिसमें 36 बिरादरी के भाईयों को जोड़ा जाए। आज जाट आरक्षण आंदोलन न होकर जातीय अराकजता जैसे हालात हो गये हैं। हरियाणा में जातिगत द्वेष ना रहे, भाईचारा कायम रहे। आज हमें आपसी सद्भावना बनाने की जरूरत है। इसी में हम सबकी भलाई है।

आवश्यक सूचना

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला द्वारा 2 अक्तूबर 2018 को 10 बजे से 4 बजे तक "परिवार परिचय सम्मेलन" का आयोजन सर छोटूराम जाट भवन सैक्टर–6, पंचकूला किया रहा है जिसमें विवाह योग्य युवक–युवतियों का पारस्परिक परिचय कराया जायेगा। इस सम्मेलन में भाग लेने वाले युवक–युवतियों व उनके माता–पिता/अभिभावकों के लिये भवन परिसर में निःशुल्क रात्रि विश्राम व खाने की व्यवस्था भी की जायेगी। फोनः 9888004417

आप सभी से निवेदन है कि इस कार्यक्रम के सफल व भली–भांति आयोजन के लिये अपने विचार व सुझाव जाट भवन, 2–बी, सैक्टर–27 ए, चंडीगढ़ व सर छोटूराम जाट भवन सैक्टर–6, पंचकूला में भेजने का कष्ट करें।

जिसके पास विद्या रूपी नेत्र नहीं है, वह अंधे के समान है। – अज्ञात

म्हारी छोरियां छोरों से कम नहीं

– शमीम शर्मा

(खेत जोत कर निकले हरियाणा की छोरियो के सधे कदम शिक्षा के बल पर हर क्षेत्र में ऊंचाइयों को नापने लगे हैं। कभी घर की चौखट तक सिमटी हरियाणा की महिलायें देखते ही देखते पूरे समाज की धुरी बन गई। नेता, अभिनेता, खिलाड़ी कौन सी ऐसी राह बची हैं जहां हमारी बेटियों ने झंडे नहीं गाड़े हैं। कभी पति के नाम से जानी जाती थी, आज गांव की पूरी पंचायत ही महलिओं की है। कबड्डी, कुश्ती में सोना बिखेरा, साइना नेहवाल के चिड़ी–बल्ले ने अच्छे–अच्छों को धूल चटाई, शायद इसीलिये आज पूरा देश हरियाणा की बेटियों के गर्व से निहार रहा है। अधिक जानकारी के लिये पढ़े यह रोचक लेख)

एक समय था जब हरियाणा का नाम आते ही सिर शर्म से झुक जाया करता कि इस राज्य में लिगांनुपात में भयावाह असमानता है। अब जबकि लिंगानुपात में सराहनीय संतुलन दिखाई दे रहा है तो साथ ही यहां की बेटियों के करिशमों ने हमें गर्व से सिर उठाने का अवसर प्रदान किया है। घूंघट की ओट में जाने वाली हरियाणवी महिलाओं और लड़कियों में अब गजब का आत्मश्विास और जीवन के प्रत्येक मैदान में यहां के दूध–दही की लाज रखने का जज़्बा है। उन्होंने हर क्षेत्र में ना केवल अपनी शानदार दस्तक दी है। बल्कि एक स्वर्णिम इतिहास भी रचा है।

लक्ष्मीबाई की तरह पीठ पर अपने बच्चे को बांध घोड़े पर सवार हो अब उसे युद्ध के मैदान में जूझने तो नहीं जाना होता पर स्कूटर–स्कूटी पर बैठ और पीछे अपने बच्चे को बिठा वह नौकरी और घर की चौखट तक जो संघर्ष कर रही है, वह उसके लक्ष्मीबाई जैसी साहसी होने पर मुहर लगाता है। गांवों की पगडंडियों पर बैलगाडी चलाने वाली हमारी हजारो–हजार हरियाणवी लड़कियां अब कार, जीप, स्कूटर–साइकलों पर सवार हैं। हरियाणा का आज कोई गांव ऐसा नहीं है जहां ब्यूटी पार्लर और बुटीक ना हो। लड़कियों ने इन दोनों कामों में वारे–न्यारे कर रखे हैं। शहरों में तो यह पहले से ही आम बात है। प्रदेश के सभी सरकारी महकमों में शिखर पदों पर उनकी उपस्थिति देखी जा सकती है। आज कई जिलों की उपायुक्त और पुलिस, अधीक्षक की बागडोर भी महिलाओं के हाथों में है। शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, फौज, खेल, उद्योग, पंचायत–प्रशासन, साहित्य, सिनेमा–टीवी, नृत्य–संगीत, समाज उत्थान और राजनीति आदि कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां हरियाणवी छोरियों की धमक ना सुनायी देती हो। नेपथ्य में रहकर पनघट से पानी लाने, उपले थापने, गाय–भैंसों की धार निकालने और खेतों में मंडासा मार लामणी करने में सहयोग देने वाली हरियाणा की बेटियों ने अब शिक्षित होकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा और कौशल का परिचय दिया है जिसे देख दूर–दूर से आवाजें आ रही हैं कि ऐसी बेटियां तो घर–घर में होनी चाहियें। कभी हमारी बेटियाँ पीएमटी और आईआईटी में टॉप करती हैं तो कभी यूपीएससी की परीक्षाओं में। सीबीएसई के इम्तिहानों में अव्वल रहना तो अब उनके लिये आम बात है।

इतिहास के पन्नों को पलटें तो पता चलता है कि अपनी प्रतिभा के बल पर हरियाणवी नार सदैव विशिष्ट योगदान देती रही है। पर तब उनकी संख्या मुट्ठी भर ही थी। सच्चाई तो यह है कि अब तक हरियाणवी बहू–बेटियां अपरोक्ष रूप में घरेलू कामकाज के साथ–साथ पशु पालन और खेतीबाड़ी में योगदान देती रहीं और अपनी स्वतंत्रता और स्वावलम्बन के लिये छटपटाती रहीं। पर शिक्षा के प्रसार और अवसरों का बाहुल्य मिलते ही उन्होंने अपना झण्डा गाढ़ दिया है। जब तक पर्दे के पीछे थीं तब तक वे सिर्फ घरेलू जीवन की धुरी हुआ करतीं पर अब तो हरियाणवी समाज की प्रतिष्ठा और विकास की मुख्य धुरी बेटियां ही हैं जिन्होंने अपने अनवरत संघर्ष और श्रम से एक नये अध्याय की रचना की है जिसकी ओर समूचा राष्ट्र गर्व से निहार रहा है। बात राजनीति की हो तो दादरी की चंद्रावती, शैलजा, ओमप्रभा जैन, गीता भुक्कल, सावित्री जिन्दल, कविता जैन, नैना चौटाला, किरण चौधरी, रेणुका बिश्नाई आदि महिला राजनेताओं ने सत्ता की कुर्सियों पर ना केवल अपने विराजमान होने की सरचंना दी है बल्कि समाज और नारी हित में निर्णय लेने की अपनी क्षमताओं से भी अवगत करवाया है।

पंचायतों में 33 प्रतिशत आरक्षण मिलने के बाद सैकड़ो की संख्या में महिलायें राजनीति में आ चुकी हैं। हिसार जिले के भिवानी रोहिल्ला जैसे गांवों की पूरी पंचायत ही महिलाओं की है। इसके अलावा अपने पास शैक्षणिक डिग्रियां होने के कारण महिलाऐं उन क्षेत्रों में भी विजयी हुयीं, जहां उनके पति निरक्षर या कम पढ़े–लिखे थे। इतिहास गवाह है कि अब तक महिलाओं को अपने पतियों के ओहदे से जाना जाता था जैसे डॉक्टर की पत्नी डॉक्टरनी और मास्टरी की पत्नी मास्टरनी। पहली बार हुआ है कि महिलाओं के सरपंच बनने 'सरपंच पति' शब्द सुनने को मिला है। इतना ही नहीं आज जिला परिषदों से लेकर मेयर के पदों पर महिलायें हैं और गंभीर फैसले लेती हैं।

हाल ही में हरियाणा की मानुषी छिल्लर विश्वसुंदरी के खिताब से नवाजी गयी है जो इस बात की पुष्टि करता है कि व्यक्तित्व विकास और रूप लावण्य में भी यहां की बालाएं अपने आत्मविश्वास और वाकपटुता से पूरे विश्व में अग्रणी हैं। टीवी न्यूज वाचन में सोनीपत की मीमांसा मलिक एक चिरपरिचित नाम है। इसके अलावा अनेक हरियाणवी छोरियां टीवी सीरियल्स में प्रभावशाली अभिनय द्वारा अंगद के पांव की तरह जमी हुयी है। टीवी धारावाहिकों में मेघना मलिक ने 'अम्मा जी' बनकर जो धूम मचायी, उसकी गूंज दूर, तक सुनायी दी। 'बिगबॉस' में एंट्री ने सपना चौधरी की प्रसिद्धि को दुगना कर दिया। हरियाणा के रीति–रिवाज और संस्कृति को मुखर रखने वाली अर्चना सुहासिनी ने खासी धूम मचायी है। साहित्यिक मंचों और कवि सम्मेलनों में एंकर के तौर पर हिसार की अल्पना सुहासिनी ने ख्याति प्राप्त की है।

बॉलीवुड में अंम्बाला की जूही चावला और रोहतक की मल्लिका सेहरावत ने अपना सिक्का जमाया है। फिल्म फेयर अवार्ड प्राप्त परिणीति चोपड़ा ने भी हिन्दी फिल्मों में अपनी जबरदस्त पहचान बनायी है। प्रभाकर, बरखा बिष्ट, नेहा बंसल आदि की भूमिका भी फिल्मी अभिनय के क्षेत्र में जाने–पहचाने नाम हैं। पंजाबी फिल्मों में रोहतक की पारूल गुलाटी एक जानामाना नाम बन चुका है। करनाल की कल्पना चावला ने अंतरिक्ष को नापा है। कल्पना चावला के नाम से करनाल में मेडिकल कॉलेज की स्थापना हुयी है। एशियन, कॉमनवेल्थ, विश्व चैंपियनशिप से लेकर ओलपिंक तक में हरियाणा की छोरियां पूरा नाम कमा रही हैं। हॉकी हो या क्रिकेट, कबड्डी हो मुक्केबाजी, वे अच्छों–अच्छों को पानी पिला चुकी हैं। एक छोटे से युवा राज्य हरियाणा की लड़कियों ने सोने–चांदी के मेडलों से सिद्ध कर दिया है कि वे किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। खेलों में यहां की बेटियों की स्वर्णिम उड़ान देखकर हर कोई दांतो तले अंगुली दबा रहा है। सायना नेहवाल की उपलब्धियों पर पूरा हरियाणा थिरकता है। चिड़ी–बल्ले के खेल में हिसार में जन्मी इस लड़की ने पूरी दुनिया के तोते उड़ा दिये हैं। खेल रत्न और पदम भूषण से सम्मानित सायना हिन्दुस्तान की पहली लड़की है जिसे बेडमिंटन में ओलंपिक में कास्य मेडल जीतने का गौरव प्राप्त है।

रोहतक के गांव मोखरा की साक्षी मलिक ने कुश्ती के दांव–पेंच ऐसे लगाये कि कईयों को चित्त करते हुये रियो ओलंपिक में कांस्य पदक हरियाणा की झोली में डाला। इससे पहले भी वह अनेक अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में चैंपियन रह चुकी

है।

अग्रोहा की कृष्णा पूनिया और सोनीपत के गांव खेवड़ा की सीमा अंतिल ने डिस्कस थ्रो में एशियन एवं कॉमनवेल्थ मुकाबलों में हरियाणा के नाम को और ऊंचा कर दिया। अग्रोहा की गीतिका जाखड़ कॉमनवेल्थ कुश्ती चैंपियनशिप में दो बार गोल्ड जीतने के साथ–साथ नौ बार 'भारत केसरी' भी रह चुकी हैं। गीतिका जाखड़ देश की प्रथम अर्जुन अवार्डी महिला है। हिसार की ललिता सहरावत ने भी पहलवानी में चांदी बिखेरी है। भिवानी के छोटे से गांव बलाली की पांच बहनों ने कुश्ती पर आज अपना राज जमा लिया है। इस गांव की चार बहनों का चयन कॉमनवेल्थ मुकाबलों के लिये हुआ है जिनमें गीता, विनेश, रितु और संगीता फौगाट शामिल हैं। विशेष बात यह है कि कॉमनवेल्थ चैंपियनशिप के लिये चुनी गई 20 महिला पहलवानों में 16 हरियाणवी थी। जिन्होंने अपने दम–खम पर स्वर्ण व रजत पदक जीते। इतना ही नहीं, फौगाट बहनों की सफलता और समर्पण ने आमिर खां जैसे अभिनेता को 'दंगल' फिल्म बनाने की प्रेरणा दी, जिसमें कुश्ती की धुरंधर खिलाड़ी गीता–बबीता का उपलब्धियों को उजागर किया गया है। कपिल शर्मा के शो तक में फौगाट बहनों ने अपने जलवे बिखेरे तो दर्शक दीर्घा से तालियों की गूंज ने उनके सम्मान पर गर्व व्यक्त किया। हॉकी की स्टिक हरियाणा की लड़कियों के लिये जादुई छड़ी है जिसे घुमाते ही मेडलों की बाढ़ सी आ जाती है। शाहबाद की रानी रामपाल और सिरसा के गांव जोधकां की सविता पूनिया ने हॉकी खेल में जो पहचान बनाई है वह अचंभित करने वाली है। इनके साथ जसप्रीत कौर, नवनीत कौर, नवजोत, मोनिका, सोनिका और नेहा के नाम भी बड़े लाड़ के साथ लिये जाते हैं। रोहतकवासी हॉकी की पूर्व कप्तान ममता खर्ब तो 'गोल्डन गर्ल' के नाम से लोकप्रिय हुयी। पदमश्री की उपाधि से सम्मानित रेवाड़ी जिले के गांव जोनियावास की संतोष यादव के नाम से कौन परिचित नहीं है जिसने माउंट एवरेस्ट को फतह कर दिखाया था। दुनिया की सबसे कठिन पर्वत श्रृंखलायें भी हिसार की अनीता कुंडू का रास्ता अवरुद्ध नहीं कर सकीं और वह देश की पहली महिला है जिसने चीन की ओर से माउंट एवरेस्ट शिखर पर तिरंगा फहराया है।

उद्योग जगत में हिसार की समीनू जिन्दल जैसी अनेक महिलाओं ने स्वयं को सिद्ध किया है। जिन्दल सॉ नामक कंपनी की प्रबंध निदेशक होने के अतिरिक्त 'स्वंय' नामक एनजीओ की संस्थापक प्रधान के रूप में समीनू जिन्दल ने दिव्यांगों की सहातार्थ जो पहल की है स्तुतिजन्य है। 11 वर्ष की उम्र से वह व्हील चेयर पर है पर उसकी सोच और चिंतन का पहिया सतत विकास की राह पर गतिशील है। यह उसके प्रयासों का ही परिणाम है कि आज प्रत्येक संस्थान में व्हीलचेयर जनों के लिये रैंप निर्माण अनिवार्य है। खियात आईटी फर्म की सीईओ जीन्द की हरजिन्दर कौर ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। आज हजारों हरियाणवी महिलायें उद्योग प्रबंधन और उत्पादन से जुड़ी हुयी हैं।

नामों की सूची की ओर न जाकर संकेत करना ही पर्याप्त है कि हाल ही में अपनी स्वर्ण जयंती मनाने वाले राज्य की असंख्य लड़कियां वकील हैं, न्यायधीश हैं, मल्टीनेशनल कंपनियों में उच्चाधिकारी हैं, अकाउंटेंट हैं, फौज में कैप्टन हैं, पॉयलट हैं तथा उच्चतर शिक्षा और चिकित्सा सेवाओं में हरियाणवी बेटियों की एक बड़ी संख्या हैं जो राज्य के विकास को गति दे रही हैं। एमए, बीए, और सीए पास की तो गिनती करना भी कठिन होगा। लड़कियों के उत्थान में हरियाणा पहल करता जनर आ रहा है और यह पहल जारी रहनी चाहिये। यहां की पृष्ठभूमि को देखें तो संकीर्णता की संस्कृति ही परिलक्षित होती है जहां लड़कियों के लिये अनगिनत वर्जनायें और लक्ष्मण रेखायें खिंची रहती थीं। पुरूषवादी समाज की अवधारणा हरियाणा में पुख्ता रूप से विद्यमान रही है और पुरुष वर्चस्व महिमा मंडित हुआ है। ऐसे में आज लड़कियों का उभर कर आना किसी जादू से कम नहीं है जो समाज की बदलती मानसिकता का प्रमाणपत्र है।

महावीर फौगाट अपनी बेटियों को पुरूषों का खेल कुश्ती तक लड़वा देता है। आज ऐसे ही पुरूषों की जररूत है जो बेटियों के कौशल को साबित करने के लिये अपनी जी–जान लड़ा दें और लड़कियों के लिये अवसरों की कतारे खड़ी कर दें। यह हमारे लिये गर्व की बात है कि आज हमारी बेटियां ना केवल लड़को की बराबरी कर रही है बल्कि उनसे दो कदम आगे बढ़ती दिख रही हैं।

जाट सभा द्वारा कटरा (जम्मू), जे एण्ड के प्रांत में रहबरे आजम दीनबंधु चौ0 छोटूराम यात्री निवास का निर्माण।

आप को जानकार अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला द्वारा आप सभी के सहयोग से माता वैष्णों देवी के दर्शन को जाने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा प्रदान करने हेतु कटरा (जम्मू) में उपरोक्त "यात्री निवास" बनाने का निर्णय लिया गया है। माता वैषणो देवी के दर्शन करने के लिए देश के किसी भी हिस्से से आने वाले जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला कटड़ा (जम्मू) रहबरे आजम दीनबन्धु चौधरी छोटूराम के नाम पर रात्रि विश्राम गृह बनाने का काम शुरू हो चूका है।

अतः सभी दान वीर सज्जनों से प्रार्थना है इस कार्य के लिए जाट सभा चंडीगढ़ का सहयोग करके रहबरे आजम चौधरी छोटूराम को श्रद्धांजलि देने के साथ माता वैषणो देवी का आर्शीवाद प्राप्त करे।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी एवं पुनीत कार्य के लिये स्वेच्छानुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानवीर या दानकर्त्ता यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू राशि देता है तो इसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अकिंत किया जायेगा। इस भव्य प्रोजेक्ट के लिये निर्माण सामग्री का योगदान भी दिया जा सकता है। भवन निर्माण के लिये अनुदान की राशि नकद, चेक, डिमाण्ड ड्राट, आर.टी.जी.एस/एन.ई.एफ.टी. की मार्फत 'जाट सभा चण्डीगढ़' के पक्ष में जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, चण्डीगढ़–160019 को भेजी जा सकती है अथवा जाट सभा के अकाउंट न0 5010002301145552, IFSC Code : HDFC 0001324 में सीधे ट्रांसफर की जा सकती है।

यात्री निवास के लिये अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जायेगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका "जाट लहर" में भी प्रकाशित किया जायेगा। जाट सभा को दी जाने वाली अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

कार्यकारीणी जाट सभा
चण्डीगढ़/पंचकूला

दुनिया का अस्तित्व शस्त्र बल पर नहीं, सत्य, दया और आत्मबल पर है। –महात्मा गांधी

अन्धेर नगरी-चौपट राजा!

–डॉ॰ धर्मचन्द्र विद्यालंकार

महाभारत महाकाव्य में यह कहा गया है– ''राजा कालस्य कारणम्'' अर्थात् राजा ही काल का कारण है या पिफर निर्माता है। दूसरी बात यह कही गई है कि 'यथा राजा तथा प्रजा'। तात्पर्य यह है कि जैसा राजा या शासक जिस देश या राज्य का होगा, वहाँ की प्रजा भी बैसी ही होगी। गीता में भी यह कहा गया है कि ''यद्श्रेष्ठशचरति तदैवेतरे जना''' अर्थात् समाज के महान या आदर्श पुरुष जैसा आचारण करते हैं, जनसाधरण भी उसी का अनुसरण करता है। महाजनो येन पन्थः जैसी संस्कृत की सूक्ति भी उसी ओर स्पष्ट संकेत करती है।

यहाँ पर यह प्रश्न उठाया जा सकता हे कि उपर्युक्त पुष्ट प्रमाण तो सामन्ती अथवा राजतंत्रीय शासन–प्रणाली के ही पक्षधर हैं। राजशाही में तो प्रजा को राजा के अनुरूप ढलना अपरिहार्य ही था। लेकिन लोकशाही में तो इसके विपरीत ही होना चाहिए। वहाँ पर तो उल्टे शासक को ही अपनी रीति–नीति प्रजा की परम्पराओं और परिस्थितियों के अनुरूप बनानी चाहिए। क्योंकि जनतांत्रिक शासन–पति में तो वही उसकी जननी है– चयन और वरण करने के कारण। हाँ, एकतंत्रीय शासन–व्यवस्था में तो सारी शक्तियाँ एकमात्र राजा में ही समाहित रहती थी क्योंकि वह राजपुरोहितों के मतानुसार देवपुत्र अथवा देवताओं का वंशधर था– राम या कृष्ण का या फिर सूर्य और चन्द्रमा का। अतएव उसके बुद्धिबल और विवेक को प्रश्नांकित भी कैसे किया जा सकता था। फिर राजतंत्रात्मक शासन–पद्धति में उसके अंसगत अथवा अनीतिपूर्ण आचरण पर उंगली उठाने की औकात भी किसकी थी। क्योंकि वे जन्मजात दैवीय अधिकारों से सम्पन्न शासक थे, कोई निर्वाचित नेता तो थे नहीं।

अतएव जो राजा का धर्म होता था, वही राजधर्म माना जाया करता था। जो उसका आराध्यदेव होता था, वही राज्य की प्रजा के भी आराध्य देवी या देवता बन जाते थे। जम्मू–कश्मीर के मन्दिरों में जाइये, वहाँ पर रघुनाथ मंदिर के काम रणवीरेश्वर हैं क्योंकि शिवोपासक हैं तो उनके लिए ही कर्णेश्वर महादेव का मंदिर निर्मित है। गंगानगर बीकानेर में राजा कर्णी सिंह द्वारा निर्मित और पूजित कर्णीदेवी का चूहों का प्रसिद्ध मंदिर है। हमारे कहने का अभिप्राय यही है कि सामन्ती शासन–व्यवसीा में राजा या शासक ही सारी राजनीतिक और धर्मिक शक्तियों का मूलाध्िाष्ठान था। अतएव प्रजा तो उसी की परमुखापेक्षी होती ही थी।

वर्तमान आधुनिक काल में सामन्तवाद की समाप्ति पर ही पूंजीवादी व्यवस्था के कारण प्रजातांत्रिक शासन–प्रणाली का प्रचलन प्रारंभ हुआ है। जिसमें जनमत किवां लोकमत ही राजशक्ति की संघारिका है। जनतंत्रा में जनशक्ति अथवा लोकशक्ति ही शक्ति का मूलभूत सत्ता–स्त्रोत है। परन्तु जनतांत्रिक राजसत्ताओं ने धर्मसत्ताओं का असीमित आश्रय पाकर भी कई बार लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को भी एकतंत्रात्मक शासन–पद्धतियों में परिवर्तित कर दिया है। यहाँ पर यह ज्ञातव्य है कि नेपोलियन जैसे जरनल और हिटलर जैसे एकाधिकारी सर्वसत्तावादी शासक जनतांत्रिक विधि–व्यवस्था से ही निर्वाचित हुए थे। परन्तु बाद में वे उसी जनतांत्रिक व्यवस्था में सर्वाधिकारी किवां एकाधिकारी बन बैठे थे। वर्तमान विश्व में भी हम ऐसी अलोकतांत्रिक प्रवृत्तियाँ पुनः एक बार उभरती देख रहे हैं। चीन और रूस में सीशीद्ध और पुतिन आजीवन के लिए शासक बन बैठे हैं। अरब–जगत् में तो खैर जनतंत्रा का अभी जन्म ही कहाँ हुआ है, ठीक से। इसीलिए अरब–अमीरात से लेकर सीरिया तक एकाधिकारी शासक सत्तासीन है। और तो क्या जर्मनी में मार्खेल चौथी बार राष्ट्रपति या चांसलर निर्वाचित हुई हैं तो अमेरिका में ट्रंप वैसे ही सर्वसत्तावादी बनने को आतुर हैं। भारत में भी मोदी उसी ओर अग्रसर हैं।

आश्चर्य की बात तो यह है कि इतिहास–ग्रंथों में भी लोग सम्राटों के नामों अथवा राजवंशों को ही जानते हैं, किसी जनतांत्रिक श्रेष्ठ शासक को भी इतिहास में उतना महत्त्व कहाँ मिला है। भारतीय इतिहास में सम्राट अशोक और अकबर या राजा चन्द्रगुपत विक्रमादित्य द्वितीयुद्ध अथवा राजा भोज ही ऐस दो–चार महान और उदार साम्राज्यवादी शासकों के नाम इतिहास के स्वर्ण–पृष्ठों पर अंकित हैं। रोमन सम्राट सीजर और आगस्टस के कुछ ही नाम हम सब सुनते और पढ़ते रहे हैं। लेकिन यूनानी जनतांत्रिक महानतम शासक पैराक्लीज़ का नाम कितने लोग जानते हैं? जोकि सीधा जनता द्वारा निर्वाचित होकर आया था और जिसने प्रथम बार शासन की शक्तियों का संभाजन मंत्री–परिषद् में किया था। एथेन्स के सभी नागरिकों को वैचारिक स्वतंत्राता प्रदान की थी। विद्वानों और दार्शनिकों को अपने राजदरबार में सम्मानीय स्थान देकर उनके साथ विचार–विमर्श का उन्मुक्त अवसर प्रदान किया था। प्लेटो और अरस्तु उसी के राजदरबार की स्वर्ण–शोभा थे।

सम्राट अकबर के पश्चात स्वतंत्रा भारत के प्रथम प्रधनमंत्री पं॰ जवाहरलाल नेहरू भी ऐसे ही जनतांत्रिक और उदारचेता एवं लोकप्रिय प्रधनमंत्री या शासक थे। उन्होंने अपने विचार–विरोधी श्यामाप्रसाद मुखर्जी और डॉ॰ अम्बेदकर जैसे लोगों को भी अपने मंत्री–मंडल में सहर्ष स्थान और सम्मान दिया था। राजतंत्रीय या सामन्ती शासन–विधन की इतिश्री की थी। जागीरदारी अथवा ताल्लुकदारी कृषि–व्यवस्था का विनाश किया था। भूपरिसीमन जैसे जनहितकारी और जनकल्याण के पुरोगामी का प्रगतिशील नियमविधन बनाकर भूमि–सुधर कराये थे। उत्तरप्रदेश जैसे महादेश में उन्होंने चौ॰ चरणसिंह जैसे कृषक–मसीहा लौह–पुरुष को ही यह क्रांतिकारी कार्यक्रम सौंपा था, जिसको उन्होंने उत्तरप्रदेश जिसकी जनसंख्या रूस के समान थी, उसमें सुचारू रूपेण क्रियान्वित कराया था। बाद में तो राजस्थान से लेकर गुजरात से महाराष्ट्र तक वही भू–सुधर के परिवर्तकामी नियम–विधनों का कार्यपालन किया गया था। सांस्कृतिक विकास के लिए आकाशवाणी महानिदेशालय स्वायत बनाया गया था। साहित्यिक अकादमी और कला–अकादमियों की स्थापना कराई गई। जिनमें उन क्षेत्रों के चिरसाधक और योग्यतम व्यक्तियों में बिठाया गया था। विरोधी विचारों वाले योग्यतम व्यक्तियों को भी यथायोग्य सम्मान दिया गया था। कहाँ आज प्रगतिशील विचारों के लोगों को चुन–चुन कर मारा जा रहा है और शिक्षा–संस्थानों से लेकर साहित्यिक संस्थानों में प्रतिगामी विचारों के संघी पोंगा–पण्ड़ितों को ही पदस्थापित किया जा रहा है।

भारतवर्ष का एक सर्वसमावेशी सर्वधर्म सद्भाव समर्थक और शासन नेहरू जी के नेतृत्व में स्थापित हुआ था। अब्दुल कलाम आजाद जैसे महान मुस्लिम विद्वान् शिक्षामंत्राी थे तो बात में नूरून हसन जैसे इतिहासकार वहीं पदस्थापित किये गये थे। इतिहास–लेखन की एक प्रगतिशील और र्धमनिरपेक्ष राष्ट्रवादी धरा का विपुल विकास हुआ। साँझी–संस्कृति या पिफर गंगा–जमुनी तहजीब को तवज्जो दी गई। गैर–साम्प्रदायिक इतिहास–लेखन की साम्राज्यवादी और अंधराष्ट्रवादी

दोनों ही विचार–वारिधिओं के मध्य में एक सामासिक संस्कृति का सुगम सेतु बनाया गया। जिससे कि एक सामासिक भारतीय सर्वसमावेशी संस्कृति और सभ्यता का सुविकास हो। आधुनिकता का नूतन विचार–वातायान खोला गया। बाहर की हवा के झौंके भी अपने घिरे घरों में आने लगे थे। तभी तो साम्यवादी विचार–परम्परा से लेकर गाँधीवाद से लेकर समाजवादी विचार–व्यवस्थाओं पर पूर्वाग्रह रहित विवेक–दृष्टि से राजनीतिक सभा–सम्मेलनों और कार्यकर्ताओं के कार्यक्रमों में खुलकर विचार–विमर्श किया जाता था। संसद–सौंध तक यही वातावरण व्याप्त हो चला था।

कहाँ पर आज एक ऐसी संकीर्णतावादी तथाकथित सांस्कृतिक विचारधरा का बोलबाला हो चला है जोकि अपने विचार–विरोधियों को ही देशद्रोही मानती है। एक धर्मनिरपेक्ष और सर्वर्ध्मसद्भाव समर्थक शासन के स्थान पर एक धर्मविशेष को ही राजधर्म के रूप में पुनः स्थापित करना चाहती है। चाहे स्वयं ऐसे र्ध्मधुरन्धरों ने स्वयंमेव स्वातंत्रय संघर्ष या संग्राम में सक्रिय सहकार भी नहीं किया था। तब स्वयं ही वे सर्वोत्कृष्ट राष्ट्रप्रेमी सर्वोपरि देशभक्त और बलिदानी स्वयंमेव ही बन बैठे हैं। जबकि उनके कई नवनायक तो अंग्रेजी साम्राज्यवादी सरकार से क्षमा–याचना करके ही घर बैठ गये थे। बल्कि यदि राष्ट्रीय कांग्रेस यदि हिन्दू–मुस्लिम जन–गण को संग–साथ लगाकर उस विदेशी राजसत्ता के विरूद्ध प्राणपण से संघर्ष–सन्नद्ध थी तो ये हमारे सांस्कृतिक राष्ट्रभक्त उन्हें ही परस्पर में लडाने का प्रबल पराक्रम दिखाकर राष्ट्रीय एकता को कमजोर कर रहे थे।

स्वतंत्रता–सम्प्राप्ति के पश्चात भारतीय कांग्रेसी नेतृत्व के समक्ष नवराष्ट्र निर्माण का सबल संकल्प और चुनौतियाँ भी थीं। तभी तो खादी–ग्रामोद्योगों की स्थापना की गई थी। गांधे जी की ग्राम–स्वराज्य संकल्पना को साकार स्वरूप देने के लिए ग्राम–पंचायतें का गठन राजस्थान के सामन्ती गढ राजस्थान में बाबा नाथूराम के नेतृत्व में नेहरू जी ने 1952 ई० में नागौर जिले के एक गाँव की पंचायत कुचेराद्ध से ही पुनः प्रारम्भ किया था। वही प्राचीण गण–संघों का सच्चा और साकार स्मारक था। पंचवर्षीय योजनाओं की विकास–व्यवस्था की गई। भाखड़ा–नांगल डैम जैसी विशाल विद्युत–परियोजनाओं का उद्घाटन हमारे नवनायक नेहरू ने किया था, जिसका शिलान्यास 8 जनवरी, 1945 को संयुक्त पंजाब के उदग्र कृषक–नायक दीनबन्धु चौ० छोटूराम ने ही किया था। अतएव नेहरू जी ने प्रगतिशील पुरागमों को अग्रसर करके आधारभूत संरचना का ढाँचा ही खड़ा कर दिया था। उन्हें ही नवराष्ट्र के नये राजमन्दिर भी तो बताया था।

यह कहना अनुचित नहीं होगा कि जिस देश में सुंई तक विदेश से बनकर आती थी। सिंगर सिलाई की मशीन भी जर्मन से आती थी। और हरक्यूलिस साईकिल और मपर्फी ट्रांजिस्टर तक वहीं का था। वहाँ पर बड़े–बड़े स्टील प्लांट राउरकेला, भिलाई, जमशेदपुर में लगवाकर रेलों तक का निर्माण विशाखापटनम और बंगाल में चितरंजनद्ध किया जाने लगा था। नये–नये राष्ट्रीय राजमार्गों का नवनिर्माण किया गया। शिक्षा–व्यवस्था के विकास हेतु गाँव–गाँव में विद्यालय खुलवाये गये। नगरों और उपनगरों में कॉलेजों का जाल बिछाया गया। औद्योगिक विकास के लिए दिल्ली–फरीदाबाद और कानपुर तथा आगरा जैसे शहरों में बडी–बडी औद्योगिक इकाईयाँ स्थापित कराई गई। श्रमिकों की सुरक्षा के लिए नियम–विधन बने और केन्द्रीय एवं राज्यों के स्तर पर श्रम–मंत्रालयों का भी गठन किया गया। जन–कल्याण कार्यों के लिए समाज–कल्याण मंत्रालय का गठन किया गया गया जोकि अनाथ बच्चों और अनाश्रित विध्वाओं के लिए सबल सहायक ही सिद्ध हुए हैं। आज, विधवा–पेंशन और वृद्ध बच्चें पेंशन उसी के पुरोगामी कार्यक्रम हैं। फिर भी हमारे वर्तमान बालखिल्य जोकि अभी दुग्धदन्ती यही अर्नगल आलाप राग रहे हैं कि सत्तर वर्षों में कुछ भी नहीं हुआ है।

जबकि किसानों को सूदखोर साहूकारों के ऋण–जाल से मुक्त करने के लिए ही गाँव–गाँव में सहकारी ऋण समितियों की स्थापना की गई थी। लैंड मोरगेज बैंकों की भी स्थापना की गई थी, जिनको वर्तमान देशभक्त सरकार भंग करने पर उतारू हैं। राष्ट्र–निर्माण के लिए जहां पर सर्वप्रथम भौतिक समृद्धि एवं विकास अनिवार्य है, उसी भाँति उसका सामाजिक और सांस्कृतिक विकास करना भी अपरिहार्य है। अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस स्वतंत्रता के संघर्ष से निकलकर या तप कर कुन्दन बनकर आई थी। अतएव आधुनिकता और र्ध्मनिरपेक्षता व जनपक्षधरता और धर्मनिरपेखता उसकी प्रखर पहचान थी। यहीं हमारी आधुनिक मानव–सभ्यता के प्रगतिपरक मूल्य भी तो हैं। लेकिन हमारे सांस्कृतिक या साम्प्रदायिक राष्ट्रवादी संघी पुरोध इन्हीं आधुनिक मूल्यों को भारतीयता अथवा सनातनी हिन्दुत्व के विरोध में खडा पाते हैं? क्योंकि वे आज तक भी हजारों वर्ष पुराने काल–बाह्य धर्मिक विधि ा–विधनों को ही शाश्वत या चिरन्तन मूल्य मान बैठे हैं। अतएव उनका विश्वास इतना भारतीय संविधन में उतना कहाँ हैं जितना कि स्त्राी और शूद्रों के समानता–सम्बन्धी अध्किारों की विरोधी मनुस्मृति की धर्मिक विधि–व्यवस्था में हैं।

यह अकारण नहीं है कि धार्मिक और सामन्ती समाज–व्यवस्था में जिन सवर्ण स्वामियों का धन–धरती और सामाजिक संरचना पर वर्चस्व होने के कारण जो विशेषाधिकार प्राप्त था, वह आधुनिक युग में जनतंत्र की स्थापना और समतामूलक संवैधनिक विधि–व्यवस्था से खंडित ही हुआ है। अतएव वहीं धर्मध्वजी पण्डे–पुजारी या पुरोहित वर्ग और हासशील सामन्ती ठाकुर–राजपूत तथा पूंजीपति बनिया–व्यापारी वर्ग एक बार पुनः उसी विषमतामूलक वर्ण व्यवस्था को राजनीतिक शक्ति–सत्ता पाकर स्थापित करना चाहते हैं। उनके लेखे एक पशु विशेष का जीवन एक मुस्लिम मानव से कहीं अधिक मूल्यवान है। गोरक्षा के नाम पर अल्पसंख्यकों को दिन–रात मारा–पीटा जा रहा है। उनकी आजीविका के अजस्र स्त्रोतों को उनसे छीना जा रहा है। आये दिन मावलिचिंग की घटनाएँ घटित हो रही हैं। मंत्री केन्द्रीयुद्ध तक उनका अभिनन्दन कर रहे हैं। पुलिस उनको सरंक्षण दे रही है। अपफवाहों के आधर पर निर्दोष और निरपराध लोगों की भीड द्वारा बलि ली जा रही है। अराजकता का एक आक्रामक और विषम वातावरण बनाया जा रहा है और इसी को वर्तमान के सर्वाधिकारी महानायक की लोकप्रियता का मापदण्ड भी तो बखाना जा रहा है। इसी को कहते हैं– "अन्धेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा"।

मूलभूत राजनीतिक कार्यकलापों एवं कार्यक्रम से जन–सामान्य को विमुख और विरत किया जा रहा। रोजगारहीन विकास की ब्यार बह रही है। धर्म के नाम पर समाज को बाँटा जा रहा है। वर्ग–चेतना कुंद की जा रही है। मध्यकालीन आस्था की अंधी आँधी बहाई जा रही है। एक सिविल मिलेशिया राजसत्ता बनाकर गृह–युद्ध का विषक्त वातावरण बनाना चाहती है। विधर्मियों को ही विदेशी और घुसपैठिये बताया जा रहा है, जबकि स्वधर्मी विदेशी भी शरणार्थी ही हैं। अल्पसंख्यकों और दलितों को गोतस्करी के नाम पर मारा–पीटा और सताया जा रहा है। इसी को तो कहते हैं– "अन्धेर नगरी चौपट राजा।"

कलियुग में रहना है या सतयुग में यह तुम स्वयं चुनो। तुम्हारा युग तुम्हारे पास है। –विनोबा भावे

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl, Mangleek (DOB 29.02.92) 26//5'4" PTET, M.Sc, BSc., in Physics from P.U. Chandigarh, B.Ed. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Singhmar, Sindhu. CONT.: 09463330394
- SM4 Jat Girl (DOB 04.11.90) 28/5'4" Doing PhD in Mass Communication from Kurukshetra University. Father retired from Government job. One brother settled in New zealand. Avoid Gotras: Rathi, Panjeta, Nehara. Cont.: 9991098915, 7015040090.
- SM4 Jat Girl (DOB 28.08.94) 24/5'4" MA Mother private teacher. Avoid Gotras: Chaudhary. Cont.: 9414307680, 7347437086
- SM4 Jat Girl (DOB 19-11-1991) 2:30am 5/3", We tack (ECE) Working as Brawn Operation Manager in (AHFL) Company at Chndigarh. Avoid Gotras: Thaken, Sindhu, Mahala. CONT.: 9866145112
- SM4 divorced Jat Girl (DOB July 88) 30/5'3" B.D.S. Avoid Gotras: Chahar, Nain, Binda. CONT.: 07347378494
- SM4 Jat Girl (DOB April 90) 28/5'4" B.Tech, MBA Ritel from P.U. Chandigarh. Avoid Gotras: Chahar, Nain, Binda. CONT.: 07347378494
- SM4 Jat Girl (DOB 06.12.94) 24/5' MCA. Avoid Gotras: Bhonkar, Gill, Lohan. CONT.: 09878533572
- SM4 Jat Girl (DOB 20.10.96) 22/5'5" M.Com. Avoid Gotras: Bhonkar, Gill, Lohan. CONT.: 09878533572
- SM4 Jat Girl (DOB 1988) 30/5'2" M.A Economics, (Hons.) NET cleared, Pursuing Ph.D last year, Father class-II officer Rtd. from Haryana Govt. Brother settled in USA. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Rana. CONT.: 09988224040
- SM4 Jat Girl 24/5'3" M.A, BEd. CCTAT passed. Avoid Gotras: Khokhar, Ahlawat, Nain. CONT.: 09467221127
- SM4 Jat Girl (DOB 1995) 23/5'7" B.Sc. Employed in Government service. Avoid Gotras: Malik, Rathi, Khokhar. CONT.: 7589064157
- SM4 Jat Girl (DOB March 89) 29/5'4" MCA from Punjab University Employed in Punjab & Haryana High Court. Avoid Gotras: Sheoran, Sangwan, Punia. CONT.: 9988359360
- SM4 Jat Girl (DOB 1988) 30/5'4" Employed as regular teacher in Chandigarh Administration. Father retired officer from Haryana Govt. Highly educated professional settled in Tricity or Govt. officer. Avoid Gotras: Malik, Kundu. CONT.: 9417093860
- SM4 Jat Girl 27/5'4" M.Sc, NET qualified, PhD final year Employed as Assistant Professor in Delhi University. Avoid Gotras: Khatri, Punia, Chhikara. CONT.: 8802251151
- SM4 Jat Girl 26/5'3" M.A. B.Ed, Economics, CTET, HTET cleared Employed as Computer operator in Chandigarh Administration. Avoid Gotras: Gill, Khyalia, Punia. CONT.: 9872616177
- SM4 Jat Girl (DOB 30.07.92) 26/5'1" MBA in Human Resource, B.Tech and Diploma in Electronics & Communication. Employed as Officer in Haryana in Japanese MNC. Avoid Gotras: Godara, Jhangu, Kundu. CONT.: 9728588691
- SM4 Jat Girl (DOB 23.07.90) 28/5'3" M.Com, B.Ed. Employed as Assistant Manager, Union Bank of India. Elder brother Major. Avoid Gotras: CONT.: 8171948891
- SM4 Jat Girl (DOB 04.12.90) 27/5'2" M.C.A. Employed in MNC Mohali. Avoid Gotras: Gulia, Dalal, Malhan. CONT.: 9780385939
- SM4 Jat Girl (DOB Nov. 91) 27/5'3" B. Tech (ECE) Employed Branch Operation Manager in subsidiary of DHFL Chandigarh. Father retired Senior Bank Manager, Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Thaken, Sindhu, Mahala and direct Sheoran. Only city based. CONT.: 8557033198
- SM4 Jat Girl (DOB 04.09.93) 25/5'2" B. Tech Employed in Noida. Avoid Gotras: Nehra . CONT.: 9821028918
- SM4 Jat Girl (DOB 06.02.90) 28/5'3" MSc. (Bioelectronics & Instrumentation) Cleared UGC, NET, JRF. Pursuing PhD. from BITS Pilani. Avoid Gotras: Nain, Lathiyan. CONT.: 9891514508
- SM4 Jat Girl (DOB 24.02.91) 27/5'4" MCA Employed in Yes Bank. Avoid Gotras: Chahal, Khubber, Gulia. CONT.: 9992500984
- SM4 Jat Girl (DOB 18.12.90) MA Public Administration. Employed as Section Officer in Haryana Govt. Power Department. Avoid Gotras: Redhu, Punia, Beniwal. CONT.: 8168892668, 9991866084
- SM4 Jat Girl (DOB 29.12.95) 23/5'2" Pharm-D (Doctor degree) 6 year. Preference doctor of urban area. Avoid Gotras: Dhull, Boora, Sheoran. CONT.: 9034378176
- SM4 Jat Girl 27/5'5" BDS. Employed in reputed MNC Chandigarh. Family settled in Chandigarh. Preferred match Tricity, Panchkula, Mohali . Avoid Gotras: Kundu, Malik, Sandhu. CONT.: 9779721521
- SM4 Jat Girl (DOB 12.11.87) 31/5'3" B. com from Delhi University, M.Com & BEd. from MDU Rohtak. Employed in a reputed private school. Avoid Gotras: Dagar, Suhag, Kharb. CONT.: 9988617961
- SM4 Jat Girl (DOB 15.09.92) 26/5'1" M.Sc., BEd. Employed in Adarsh Mahila Vidyalaya Bhiwani as Assistant Professor in Chemistry. Avoid Gotras: Singhmar, Redhu, Malik. CONT.: 9416148780
- SM4 Jat Girl (DOB 13.09.92) 26/5'2.5" BEd., M.Sc Math HTET, RTET cleared. PGT teacher in private school. Father in Haryana Forest Department. Avoid Gotras: Jatian, Dahiya, Dhattarwal. CONT.: 8901273699, 8901273698
- SM4 Jat Girl (DOB 29.09.90) 28/5'4" B. Tech, PGDM (MBA), IIM (Kashipur) 2013-15. Employed as Engineer, TCL 2012-13, TSM Maruti 2015-16, Sanalyst IPAC 2016-17, SQ Analyst CRISIL continue Rs. 16 lacs PA. Selected in IITV, Prepaqring for CAT 2018. Avoid Gotras: Dhookia. CONTACT:
- SM4 Jat Girl (DOB 10.06.91) 27/5'5" Master in Interiorb Design, Gold Medalist. Employed in Private Firms. Salary Rs. 10 lakh PA. Avoid Gotras: Panghal. CONT.: 9917354876
- SM4 Jat Girl (DOB 13.05.82) 36/5'3" Double MA. Avoid Gotras: CONT.: 8126710217
- SM4 Jat Girl (DOB 28.01.91)27/5'4.5" MBA Working in Haryana as Manager. Avoid Gotras: Nehra, Tavetia. CONT.:
- SM4 Jat Girl (DOB 01.08.91)27/ B. Com, B.Ed, M.Com, MA. Avoid Gotras: Nehra, Bisla. CONT.: 9812075731
- SM4 Jat Girl (DOB 04.09.93)25/5'2" B.Tech. Employed in Noida Avoid Gotras: Nehra. CONT.: 8979153697, 9821028918
- SM4 Jat Girl (DOB 16.02.88)30/5'2" B.Tech. M.Tech. Employed as Assistant Manager. Avoid Gotras: Deswal. CONT.: 9557701985
- SM4 Jat Girl (DOB 03.02.90)28/5'1" M. com. Avoid Dangi, Dhama. CONT.: 9873137917
- SM4 Jat Girl 28//5'5" M.A. English, B.Ed. CTET, HTAT, NET cleared. Pursuing PhD. Avoid Gotras: Jatan, Chahal. CONT.: 09417565431
- SM4 Jat Girl (DOB 29.02.92) 26//5'4" PTET, MSc., BSc. in Physics from P.U. Chandigarh, B.Ed. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Singhmar. CONT.: 09463330394
- SM4 Jat Girl (DOB 15.07.89) 29/5'4" B. Com, M.Com, MBA from Punjabi University Patiala Employed in Indian Overseas Bank at Noida. Avoid Gotras: Sangwan, Sunda, Pawariya. CONT.: 9646519210
- SM4 Jat Girl (DOB 05.02.96) 22/5'5" JBT, Graduation final year. Avoid Gotras: Neotne, Badhran, Panjeta. CONT.: 9467412702
- SM4 Jat Girl 29//5'8" MBBS, M.D. Working as Senior Representative in Chandigarh hospital. Avoid Gotras: Suhag, Sangwan. CONT.: 09416896043
- SM4 Jat Girl (DOB 25.01.90) 28/5' BA (Gold Medal) B.Ed., MA, M.Phil,

(Gold Medal) Pursuing PhD. HTET, CTET cleared. Working as PGT History in Govt. School. Avoid Gotras: Rangi, Rana, Kuhar, Solanki, Gahlan, Tomar. CONT.: 09467507715, 09467667085

- SM4 Jat Girl (DOB 26.04.89) 28.11/5'3" M.Sc (Hons.) Chemistry PU., B.Ed, Doing Ph.D in Chemistry last year from IIT Ropar. CTET, HTET & GATE clear. Senior Research Fellow. Father retired from HMT. Avoid Gotras: Nehra, Sangwan, Mandhan. CONT.: 9355783100
- SM4 Jat Girl (DOB18.08.88) 29.6/5'4" M.Sc Math. Pursuing M.Ed. Employed as PGT Teacher-Math in New Indian School, Pinjore. Running Coaching Institute. Father retired from HMT. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal.CONT.: 9354839881
- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 25.10/5'5" B.A. LLB, (Hons) LLM, Persuing Ph.D from M.D.U. Rohtak. Advocate in Punjab & Haryana High Court. No dowry seeker. Preferred match Chandigarh, Panchkula Own Flat at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal. CONT.: 9417333298
- SM4 Jat Girl (DOB 21.04.88) 28.3/5'1" M.Tech from P.U. Chandigarh, GATE cleared. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhal. CONT.: 9467671451
- SM4 Jat Girl (DOB 19.08.88) 5'6/5" MA (Sociology), B.Ed. Working as regular teacher in a reputed school at Panchkula. Father worked as Sub Divisional Engineer, HUDA. Avoid Gotras: Beniwal, Dabas, Sehrawat. CONT.: 9876060046, 09815879978
- SM4 Jat Girl (DOB 01.01.95) 23.5/5'2" MSc. (Maths) final semester result awaited. Avoid Gotras: Beniwal, Dhill, Nehra, Godara. Preferred Govt. officer, Lecturer/Teacher from Chandigarh & Panchkula. May be from Karnal and Kurukshetra. CONT.: 9466442048
- SM4 Jat Boy 29/6'1" Bachelor of Architecture from Chandigarh College of Architecture. Master of Construction Management from Melbourn University, Australia. Job in Australia. Avoid Gotras: Rathi, Kadian, Bad Chauhan. CONT.: 8053883567
- SM4 Jat Boy 29/5'10" Sub Inspector in Delhi Police. Well settled family. Government job preferred. Avoid Gotras: Nain, Brar, Beniwal. CONT.: 9467037995
- SM4 Jat Boy (DOB 7.9.90) 28/6' B.Tech in Civil from ICFAI University Dehradun. Employed as Custom Officer in Indian Custom Mumbai . Father Rtd. Govt. Officer, Mother Rtd. Govt. medical officer. Avoid Gotras: Poria, Rathi, Singhdoha. CONT.: 9417069129
- SM4 Jat Boy (DOB 25.04.89)29/5'11" B. Tech from P.U., M.Tech from PEC Chandigarh. Officer in Punjab Government. Only son. Father retired officer from Haryana Govt. Tricity Govt. job preferred. Avoid Gotras: Ahlawat, Malik, Siwach, Prohibited Rathee. CONT.: 8146834770, 9888099027
- SM4 Jat Boy (DOB 27.02.90)28 PR holder, Staying in New Zealand. Owner of a store in Auchland, New Zealand. Father retired from Haryana Govt. Mothr Govt. teacher. Avoid Gotras: Chhikara, Dahiya, Bajar. CONT.: 9467680428, 6283513684
- SM4 Jat Boy (DOB 12.10.90)28/5'11" BA, JBT, HTET passed Own business, Agency of Vita and Amul. Plot in Rohtak, 2 Acre land. Avoid Gotras: Deswal, Kadian, Malik. CONT.: 9992446838, 9416947434
- SM4 Divorcee Jat Boy (DOB 10.04.92)26/6' English Steno ITI, Computer ITI, D-Pharmacy Employed in Medical Store. Salary Rs. 30000/- Avoid Gotras: Deswal, Maan, Phalswal, Kuhar, Malik, Suhag, Jakhar. CONT.: 9050506666, 7027027777
- SM4 Jat Boy (DOB 1.1.75)43/5'6" Matric Two agriculture land. Avoid Gotras: Chahal, Sida, Gill. CONT.: 9467189503, 9588580619
- SM4 Jat Boy (DOB 25.08.80)38/5'6" Graduate, PGDBM, Diploma in Pharmacy. Working in private Company. Own plot, Commercial property. Preference Divorcee, Widow, old age of age 30-35. Avoid Gotras: Dagar, Tushir, Phogat. CONT.: 9250669502, 9953437099
- SM4 Jat Boy (DOB 21.11.88)30/5'11" BCA Own business. Avoid Gotras: Chahar, Koyal. CONT.: 9810008210
- SM4 Jat Boy (DOB 16.09.91) 27/5'7" MCA, CS Employed as software Engineer. Avoid Sehrawat, Attery. CONT.: 9634363379
- SM4 Jat Boy (DOB 24.11.92) 26/5'9" B.Tech. Employed Rs. 2.5 LPA. Avoid Rana, Dhang. CONT.: 9690507484
- SM4 Jat Boy (DOB 18.08.90) 28/5'9" B.A. Employed in private job. Avoid Lamba, Gitarwal, Jitarwal. CONT.: 9001712090, 9812120229
- SM4 Jat Boy (DOB 23.02.89) 29/ B.Tech Employed in ACB limited Rajgarh. private job. Avoid Khera, Sangwan, Deswal. CONT.: 9416934364
- SM4 Jat Boy (DOB 23.07. 92) 26/6' B.Tech Employed in Assistant Manager, Haryana Gramin Bank. Avoid Kairon, Dhanda, Malik. CONT.: 9813322522
- SM4 Jat Boy (DOB 27.11.89) 29/5'10" B.Tech Biomedical Employed in MNC, earning Rs. 11.5 lacs PA. Preferred B. Tech/M.tech, BDA/MBBS girl. Avoid Jatyan, Doon, Dagar. CONT.: 9818724242, 8447734242
- SM4 Jat Boy (DOB 28.08.88) 30/5'5" B.A (Graduation) Own printing press. Avoid Malik, Tawar. CONT.: 9888151718
- SM4 Jat Boy (DOB 12.11.89) 29/6'2" B.Tech, I.T Employed in ISP Engineering Reliance Jio. Rs. 3.5 Lac PA. Avoid Tevatia. CONT.: 9837228776
- SM4 Jat Boy (DOB 08.04.92) 26/6' M.Tech Electrical Employed as Software Engineer. Avoid Chatta, Dalwal. CONT.: 8171506004, 9719155600
- SM4 Jat Boy (DOB 07.08.88) 30/5'10" Bachelor in Hotel Management. Employed in Hotel Abudabi. Avoid Punia, Chatthel. CONT.: 9719155600
- SM4 Jat Boy (DOB 16.09.88) 30/ B. Tech. Avoid Nehra, Bishla. CONT.: 9012075731
- SM4 Jat Boy (DOB 2.2.87) 31/5'9" B.Com. Working as Assistant Manage in Sanofi Pharma India. Salary Rs. 24500/-. Avoid Nehra, Bishla. CONT.: 7503262132
- SM4 Jat Boy (DOB 28.10.91) 27/5'9" B.Tech. (EC) Working as Constable in U.P. Police. - . Avoid Nahara, Sangwan. CONT.: 9927384808
- SM4 Jat Boy (DOB 23.12.90) 28/5'10" Chartered Accountant (India), CPA (California-US), B.Com from Chandigarh. Avoid Gotras: Bachhal, Murare. CONT.: 9729175105, 9416484990
- SM4 Jat Boy (DOB August, 1989) 29/5'10" M. Tech. from Canada Job & PR in Canada. NRI and working girl preferred. Avoid Gotras: Sarao, Basina, Aujala. CONT.: 8288853030
- SM4 Jat Boy 27/5'10" B.Tech (Electrical & Communications) Employed as Coordinator in Skill Development & Industrial Training, Haryana on CONT basis. Own house at Ladwa (Kurushetra) and agriculture land at village. Father retired as Manager from Haryana State Warehousing Corporation. Avoid Gotras: Mandhan, Sangwan. CONT.: 9050571621
- SM4 Jat Boy 25/6' B.Com, Doing M. com Employed in Central Post Office at Chandigarh. Family settled at Chandigarh. Preferred match in Govt. job. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Sandhu. CONT.: 9779721521
- SM4 Jat Boy(DOB 20.10.89)29.4/5'11" MA, Administration. Employed as Junior Officer in Health Department. Current job in Gammon Company, Agriculture. Avoid Gotras: Dalal, Kadian, Dahiya. CONT.: 9812672996
- SM4 Jat Boy (DOB 22.03.91)27/5'7" B.Com. Diploma in Computer. Employed in ICICI Bank Tricity. Father Under Secretary in Law Department Haryana. Avoid Gotras: Kodan, Kundu, Gulia. CONT.: 82840014050
- SM4 Jat Boy (DOB 04.11.91)26.3/5'10" B.Sc. Private Job in Hospitality Management Executive. Father was Ex-serviceman. Avoid Gotras: Khakar, Gill, Mor. CONT.: 9888200992
- SM4 Jat Boy (DOB 05.09.90)27.6/5'11" MBA Hotel Management four year from KUK. Father Inspector in Haryana Police. Avoid Gotras: Kadyan, Kalkal, Dahiya. CONT.: 9812483010,99992237049
- SM4 Jat Boy 29/6", B.Tech working as Manager in ITI Park Chandigarh. Avoid Gotras: Milk, Pahl, Narine. CONT.: 8054461730
- SM4 Jat Boy (DOB 30.05.1983) 5/4", Matric own Shop, Rental Income rupess 50,000 per month. Diversb no Issue. CONT.: 8591237755

20 करोड़ की लागत से कटड़ा में सर छोटूराम के नाम पर बनेगा श्रद्धालु विश्राम ग्रह

24 नवम्बर को भूमि पूजन कर रखी जायेगी पांच मंजिल भवन की आधारशिला, डा. महेंद्र सिंह मलिक

माता वैष्णवो देवी के दर्शन करने के लिए देश के किसी भी हिस्से से आने वाले श्रद्धालुओं के रात्रि विश्राम के लिए जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकुला और रहबरे आजम दीनबन्धु चौधरी छोटूराम सभा जम्मू आगामी 24 नवम्बर को कटड़ा में भूमि पूजन कर आधारशिला रखने का काम करेगी यह बात जाट सभा चंडीगढ़ के प्रधान पूर्व डीजीपी डॉ महेन्द्र सिंह मलिक ने सभा के सदस्यों की आम बैठक को सम्भोदित करते हुए कही । रविवार को चड़ीगढ़ के जाट भवन में डॉ महेन्द्र सिंह मलिक ने बताया की कटड़ा में रहबरे आजम दीनबन्धु सर छोटूराम के नाम पर एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में लगभग 20 करोड़ की लागत से बनने वाला पांच मंजिल भवन में श्रद्धालुओं के लिए हर सुविधा मुहैया करवाई जायेगी । जिसमे 300 यात्री एक साथ रात्रि ठहराव कर सकेंगे, 20 कमरे परिवारिक रूप से बनाये जायेंगे, एक मल्टीपर्पज हॉल, एक कॉन्फ्रेन्स हॉल, मैडीकल सुविधा के साथ 5 लिफ्ट लगाई जाएँगी । डॉ महेन्द्र सिंह मलिक ने कहा की 1 वर्ष 6 महीने के अंतराल में दीनबन्धु सर छोटूराम के नाम पर हरियाणा और वहां के स्थानीय के लोगो की आर्थिक मदद से आलीशान विश्राम ग्रह का निर्माण करने का काम करेगी । डॉ मलिक ने बताया की 24 नवम्बर को जम्मू कश्मीर के महामहिम राज्यपाल सतपाल मलिक और केंद्रीय मंत्री चौधरी बिरेन्द्र सिंह को भवन की आधारशिला रखने के लिए आने का निमन्त्रण भेजा जायेगा । वँहा के स्थानीय विधायक द्वारा रोड और पुलिया का कार्य सरू कर दिया है और वहां के पार्षद द्वारा दस लाख रूपये की आर्थिक मदद देने की हामी भरी गई है । डॉ मलिक ने हरियाणा प्रदेश के सभी सांसदों से भी आग्रह किया है की दीनबन्धु सर छोटूराम के नाम पर बनने वाले भवन में दिल खोलकर अनुदान देने का काम करना चहिये क्योकि माता वैष्णो देवी के दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं में आधे से ज्यादा हरियाणा प्रदेश से आते है और प्रदेश की और से वहां पर कोई और भवन भी नही है इस लिए हरियाणा के श्रद्धालुओं को वहां काफी दिक्कते आती है ।

डॉ महेन्द्र सिंह मलिक ने कहा की दीनबन्धु सर छोटूराम ने सदैव गरीब मजदूर और किसान के भले के लिए कार्य किये जिसके लिए उनको किसान मशीहा के रूप में जाना जाता है दीनबन्धु के कार्यो के लिए युवाओं को जागरूक करने की जरूरत है जिसके लिए हम सब ने मिलकर उनके नाम को और अधिक आगे लेन की जरूरत है । डॉ मलिक ने बताया की केरल में अपदब्रह्त के लिए भी जाट सभा चंडीगढ़ 2 लाख 51 हजार रूपये की आर्थिक सहायता राशि भेजने का काम करेगी । इस मोके पर जाट सभा के महासचिव, आर के मलिक, उपाध्यक्ष जयपाल पूनिया, सचिव बी एस गिल, आर आर श्योराण, आर पी श्योकन्द, रणधीर सिंह श्योराण, प्रवक्ता आनन्द लाठर, एम एस फौगाट, नरेश दहिया, प्रेम सिंह, नरेश पहलवान, डी एस ढिल्लो सहित काफी संख्या में सभा के सदश्य मौजूद रहे ।

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417

श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज, चंडीगढ़, फोन : 0172-2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।